चन्दामामा
फ़रवरी १९८७
2.50
रु०

# चन्दामामा

फरवरी 1987

★

## विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| संपादकीय | ... | ७ |
| रजी | ... | १० |
| सावधानी | ... | ११ |
| एक चित्र | ... | १७ |
| ज्वाला द्वीप | ... | १९ |
| प्राणों का मूल्य | ... | २७ |
| छोटा बादल | ... | ३३ |
| चित्तौड़ गढ़ | ... | ३५ |
| मिट्टी में सोना | ... | ३९ |
| कंजूस का खेल | ... | ४२ |
| उत्तर रामायण | ... | ४३ |
| चूड़ियाँ | ... | ५१ |
| बुरा-भला | ... | ५७ |
| ज्योतिषी का चुनाव | ... | ६२ |
| प्रकृति के आश्चर्य | ... | ६३ |
| फोटो-परिचयोक्ति | ... | ६५ |


★


एक प्रति : २-५०

वार्षिक चन्दा : ३०-००

डिज़्नी के रंग लक्सर के संग
लक्सर लाए हैं
लकी ड्रॉ में शामिल होइए
लक्सर डिज़्नी फ़नसेट
डोनाल्ड, मिकी, बैम्बी और
लक्सर ने मौज मस्ती की दुनिया बसा दी!
आइए लीजिए डिज़्नी का एक फ़नसेट
और पाइए लकी ड्रॉ का एक कूपन!
जिसमें हैं पूरे 500 इनाम — सभी एक से एक
फिर मौज मनाने में क्या देर?
Luxor®
CLARION D 349 HIN

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस बात में पर्याप्त तथ्य है कि संसार की कोई भी चीज़ पूरी तरह निरर्थक अथवा निरुपयोगी नहीं है। पर यदि मनुष्य अपनी विवेकशीलता को ताक पर रख दे और उपयोगी होने के नाम पर घर में अनावश्यक चीज़ों का संग्रह करने लगे, तो वह कभी न कभी व्यर्थ के संकट अथवा मज़ाक की स्थिति का पात्र बन जाता है। 'सावधानी' शीर्षक कहानी में इस बात को व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

## अमर वाणी

सुहृदां हितकामानां यः, शृणोति न भाषितम्।
विपत् सन्निहिता तस्य, स नरः शत्रुनंदनः॥

[जो व्यक्ति हित की कामना करनेवाले अपने मित्रों की सलाह की उपेक्षा करता है, उसका अपकार उसके निकट ही विद्यमान रहता है और वह अपने शत्रुओं को आनन्द प्रदान करता है।]

वर्ष : ३९ फरवरी १९८७ अंक : ६

एक प्रति : २-५० :: वार्षिक चन्दा : ३०-००

EKCO

# चन्दामामा' के संवाद

## विशालकाय शार्क

लांग आइलेंण्ड के तट पर कुछ समय पूर्व एक मछुआरे ने एक अत्यन्त विशालकाय शार्क मछली को पकड़ लिया। अत्यन्त विशाल इस महालकाय का वज़न १,५७० किलोग्राम है।

## अंत : कंप—भूकंप

ओरिगान की निवासिनी ३४ वर्षीया श्रीमती चार्लट किंग का सिरदर्द आनेवाले भूकंप की पूर्व सूचना का काम करता है। श्रीमती किंग जब सरकारी अधिकारियों को फोन पर अपने सिरदर्द की सूचना देती हैं तब वे समझ जाते हैं कि शीघ्र ही भूचाल आनेवाला है और तुरन्त उचित सावधानी बरतते हैं। इस प्रकार का योगायोग छह बार हो चुका है। डाक्टरों का कहना है कि छोटे से भूकंप की पहली तरंगों से ही श्रीमती चार्लट किंग प्रभावित हो जाती हैं और उन्हें सिरदर्द होने लगता है।

## तैरनेवाली कार

केलिफोर्निया की एक संस्था ने एक ऐसी कार का आविष्कार किया है, जो सड़क पर ही नहीं, पानी पर भी उसी सहजता के साथ चल सकती है।

## बर्फ़ीले प्रदेश के चीते

बर्फ़ीले प्रदेश के चीते, जिन्हें लुप्तप्राय समझा जाता रहा है, हाल ही में कुल्लू घाटी में देखने को मिले। क्योंकि इनकी चर्म बहुत अधिक दाम पर बिकती है, इसलिए इनका बहुत अधिक शिकार होता रहा। अब इन चीतों की संतति की रक्षा के लिए बहुत कड़े प्रयत्न किये जा रहे हैं।

# रजी

**च**क्रवर्ती पुरुरवा के पौत्र रजी अपनी विलक्षण वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्हें यह यश प्राप्त था कि न केवल मानवों में, बल्कि देव और दानवों में भी उनकी कोटि का कोई वीर नहीं है।

एक बार देव और दानवों के बीच युद्ध के लक्षण नज़र आने लगे। उस समय देवता एकत्रित होकर ब्रह्मा के पास गये और उनसे प्रश्न किया, "तात, हमें बताइये, इस युद्ध में किसकी विजय होगी?"

"रजी जिसके पक्ष में होगा, वही पक्ष विजयी होगा।" ब्रह्मा ने उत्तर दिया।

ब्रह्मा की यह बात दानवों के कानों तक भी पहुँची। दानव रजी के पास गये और उनसे आग्रह किया कि वे दानव-पक्ष में रहकर युद्ध करें।

रजी ने अपनी शर्त बतायी, "युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद यदि तुम लोग मुझे अपना राजा स्वीकार कर लो, तो मैं इस युद्ध में तुम्हारी सहायता करने के लिए तैयार हूँ।"

रजी की इस शर्त को दानवों ने स्वीकार नहीं किया और वे वहाँ से चले गये।

इसके बाद देवताओं ने रजी से उनके पक्ष से युद्ध में शामिल होने का आग्रह किया। रजी ने अपनी शर्त दोहरा दी, जिसे देवताओं ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

देव और दानवों का युद्ध आरंभ हुआ। रजी के नेतृत्व में देवता राक्षसों पर विजयी हुए। इंद्र ने रजी के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और अपनी कृतज्ञता प्रकट की, कहा, "पिताश्री, आपने इस युद्ध में अपनी संतति की रक्षा करने के समान हमारी रक्षा की है।"

"आप देवतागण मुझे अपने पिता समान मानते हैं। पिता का राज्य पुत्रों को प्राप्त होता है। पुत्रों का राज्य पिता को प्राप्त नहीं होता। इसलिए तुम लोग अपने राज्य पर स्वयं ही शासन करो।" रजी ने संतोषपूर्वक हँसते हुए कहा।

# सावधानी

दामोदरपुर में यतिराज अपनी सावधानी के लिए प्रसिद्ध था। उसका कहना था कि सावधानी का यह गुण उसने अपनी दादी से सीखा था, जिन्होंने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था। बचपन में ही उसके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया था, इसलिए उसकी दादी ही उसके लिए सब कुछ थीं। यतिराज को पैतृक सम्पत्ति के रूप में थोड़ी ज़मीन-जायदाद मिली थी। अब वह एक अच्छी नौकरी पर था।

यतिराज का विवाह जीवनगर की विमला नामक युवती के साथ हुआ था। विमला सुघड़ और सुन्दर थी। दोनों पति-पत्नी एक दूसरे को हृदय से चाहते थे। विमला अपने पति से हार्दिक प्रेम करती थी, पर उसका पति एक बात में जो अति सावधानी बरतता था, वह उसे पसन्द न था। वह अपने पति के इस व्यवहार पर खीज उठती थी।

रात होने पर यतिराज घर की चिटकनी को दस बार चढ़ा कर देखता। साग-सब्ज़ी या दूसरा सौदा लेते समय दूकानदार को छुट्टे पैसे दस बार गिनकर देता। यह सावधानी तो प्रतिक्रिया जगाती ही थी, पर इसके साथ उसकी एक और आदत थी। उसके लिए इस दुनिया में कोई भी चीज़ बेकार नहीं थी।

ख़ाली दियासलाइयाँ, साबुन के खोल, पोटलियों के धागे, नारियल की जटाएँ, पुराने कागज़— इन सब चीज़ों को यतिराज सावधानी से इकट्ठा करता और फिर उन्हें घर के किसी भाग में संभालकर रख देता। उसके घर में इन चीज़ों का एक अम्बार-सा लग गया था।

जब विमला ससुराल आयी तो घर में इन अनावश्यक चीज़ों का ढेर देखकर वह परेशान हो उठी। उसने घर को स्वच्छ करना आरंभ किया और सारा कूड़ा-करकट इकट्ठा करके उसे गली

राम सहाय

के कूड़ेदान में फेंक देना चाहा। उसी समय उसके पति यतिराज ने घर में कदम रखा। विमला को इस सामान को कूड़े की तरह फेंकते देख उसका दिमाग़ ठन्ना उठा। उसने लगभग चीख कर कहा, "तुम यह क्या कर रही हो? घर की ये चीज़ें एक कोने में पड़ी हुई थीं, तुम्हारा क्या ले रही थीं? क्या तुम समझती हो कि आज तक मैंने इन चीज़ों को व्यर्थ ही जमा किया है? तुम्हारे मन में इन्हें फेंक देने का विचार भी क्योंकर आया?"

विमला आश्चर्य से मुँह ताकती रह गयी, फिर बोली, "लेकिन, आप मुझे यह तो बताइये कि आप इस कूड़े का क्या करेंगे?"

यतिराज ने आपनी पत्नी की तरफ़ इस तरह देखा, जैसे कोई पागल को देखता है। फिर तीखे स्वर में बोला, "तुम्हें क्यों बताऊँ? और अगर बताऊँ भी तो क्या तुम मानोगी? सुनो! इस दुनिया में कोई भी चीज़ बेकार नहीं है। इस महान सत्य को मेरी दादी ने मुझे सिखाया था। वे हवा में एक तिनके को उड़ता हुआ देखकर भी बेचैन हो उठती थीं। याद रखो, हर चीज़ की अपनी कोई उपयोगिता होती है, कोई ज़रूरत होती है! कब कौन-सी चीज़ काम आजाये, कुछ नहीं कहा जा सकता।"

विमला को भी गुस्सा आगया। उसने अपने पति की तरफ़ आँखें टेढ़ी कर पूछा, "जरुर इन चीज़ों की उपयोगिता होगी। पर, इस कूड़े-कर कट से हम कौन-सा काम लेनेवाले हैं, मुझे पता तो लगे न?"

"सुनो, तुम मेरी बातों पर ध्यान देकर सुनो! जब हम दूकान से कोई चीज़ ख़रीदते हैं तो इन कागजों, गत्तों की पेटियों तथा धागों के साथ ही तो उस चीज़ का मूल्य चूकाते हैं। ऐसी स्थिति में इन्हें कूडे में फेंक देने का मतलब है कि हम उन अदा किये पैसों को ही कूड़े में फेंक रहे हैं।" यह जवाब देकर यतिराज ने अपनी पत्नी को आधा घंटे तक इस विषय पर भाषण दिया और अपनी ओर से उसे पूरा विश्वास दिलाया कि किन-किन प्रसंगों में इन चीज़ों का उपयोग किया जा सकता है।

इसके बाद कई महीने बीत गये। कूढ़े का वह ढेर हर रोज़ बढ़ता रहा, पर उसके उपयोग का कोई अवसर इस बीच न आया।

एक दिन विमला की सहेली प्रेमलता उसकी

नयी गृहस्थी का हालचाल जानने के लिए उसके घर आयी। उसने विमला का सारा घर घूमकर देखा, फिर विमला से पूछा, "विमला, तुम तो शादी से पहले घर की सफ़ाई को लेकर बड़े लम्बे-चौड़े भाषण दिया करती थीं लेकिन, अब तो तुमने अपने ही घर को कूड़े-करकट का भंडार-घर बना रखा है। क्या बात है ?"

सहेली की इस आलोचना से विमला को बड़ा दुख हुआ। पर उसे अपने पति की सनक का ज़िक्र करना अच्छा न लगा। उसने सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली, कहा, "प्रेम, मैं हर रोज़ सोचती हूँ कि घर की सफ़ाई करूँ, पर आलस्य इतना बढ़ गया है कि हर रोज़ काम को टाल देती हूँ।"

प्रेमलता तो चली गयी, पर उस दिन विमला का दिमाग गर्म रहा। यतिराज के आने पर वह उससे लड़ पड़ी। यतिराज भी गुस्से में आगया, बोला, "क्या मैंने आज तक इन चीज़ों को मूर्खतावश इकट्ठा किया था ? इन्हें तुम छूना मत ! एक कोने में पड़ी रहने दो ! इनसे तुम्हें तक़लीफ़ क्यों होती है ? देखना, एक दिन आयेगा, जब इनकी ज़रूरत पड़ेगी।"

उन्हीं दिनों विमला का छोटा भाई रामेश्वर अपनी बहन को देखने के लिए आया। वह बड़ा बुद्धिमान था। विमला ने उससे अपने मन की बात कही। पति की सनक-स्वरूप कूड़े के वे ढेर दिखाये, फिर कहा, "भैया, तू अपने जीजाजी की इस आदत को छुड़ाने का कोई उपाय सोच। मैं इनकी इस सनक से तंग आगयी हूँ।"

रामेश्वर ने देखा कि उसकी बहन के घर में काम की चीज़ों की तुलना में बेकार चीज़ें अधिक हैं। वह पूरे दिन सोचता रहा, फिर उसने अपनी बहन को एक उपाय बताया। विमला उस उपाय को अमल में लाने से झिझक उठी। पर उसने अपने भाई की योजना को स्वीकार कर लिया।

उस रात जब सब भोजन कर चुके तो विमला ने रामेश्वर के लिए दालान में बिस्तर लगा दिया। यतिराज और विमला कमरे में सो गये। सेने से पहले यतिराज ने अपनी आदत के अनुसार सारी चिटकनियों की कई बार जाँच की। उसके बाद ही उसने बिस्तर पर कदम रखा।

ठीक आधी रात के समय रसोई की तरफ़

कोई आहट हुई। यतिराज चौंककर उठ बैठा। उसने विमला को भी जगाया। उसी समय एक नक़ाब पोश आदमी उनके सामने कूद पड़ा। उसने कोने में पड़ी एक ख़ाली बोतल उठायी और उसे दीवार पर दे मारा। अब वह बोतल के पैने टुकड़े को लेकर उनकी ओर बढ़ा।

यतिराज काले नक़ाबपोश से भयभीत हो चिल्लाना ही चाहता था कि नक़ाब पोश ने गरज कर कहा, "अगर तुम चिल्लाये तो बोतल के इस टुकड़े से ही तुम्हें हलाल कर दूँगा! चलो, चुपचाप उस खम्भे तक चलो!"

नक़ाबपोश की आवाज़ कर्कश थी। यतिराज पहले से ही डरा हुआ था। वह चुपचाप खम्भे के पास चल पड़ा। उसके पीछे-पीछे विमला भी चली। नक़ाबपोश ने कूड़े के ढेर में से रस्सियाँ निकालीं और उन दोनों को खम्भे से बाँध दिया।

इसके बाद उसने उन्हें एक बार और चेतावनी दी कि ज़रा भी आवाज़ करने पर उनकी जान की ख़ैर नहीं है। उसने चाबियाँ लेकर तिजोरी और बक्से खोल लिये। रुपये-पैसे, आभूषण एवं क़ीमती कपड़े जमाकर एक गठरी बाँध ली। इसके बाद उस नक़ाबपोश ने रसोईघर में जाकर सारे बर्तनों को एक बोरे में भर लिया। यतिराज एवं विमला उसकी इन सारी करतूतों को चुपचाप देखते रहे।

अपना काम पूरा करने के बाद नक़ाबपोश ने यतिराज के पास आकर कहा, "आज मैं इस घर में अचानक चोरी करने आ पहुँचा। इसीलिए मैं छुरी और रस्सियाँ नहीं ला पाया था। पर तुम्हारे घर में मुझे किसी तरह की परेशानी नहीं हुई और

मेरी ज़रूरत का सामान आसानी से मिल गया। अगर सब लोग तुम्हारी तरह हमारे लिए उपयोगी इन चीज़ों को जमा करके रखें तो हमें अपने साथ कुछ भी लाने की ज़रूरत न पड़ेगी।"

इसके बाद नक़ाबपोश ने उस घर के सारे कमरे घूमकर देखे, फिर आकर कहा, "मैं जिस किसी घर में चोरी करता हूँ, उसे जलाये बिना नहीं मानता। अब मैं वही काम करने जा रहा हूँ।"

नक़ाबपोश की बात सुनकर यतिराज सक़्ते में आ गया। बड़ी मुश्किल से अपना गला साफ़ करके उसने कहा, "तुमने हमारे घर से धन, आभूषण और सारी क़ीमती चीज़ें हड़प ली हैं। अब हमारा घर क्यों जलाना चाहते हो? भगवान के लिए ऐसा क्रूर कर्म मत करो!"

"वाह, तुम तो मेरे रिवाज़ को मिट्टी में मिलाना चाहते हो!" नक़ाबपोश यतिराज पर उबल पड़ा। कोनों में पड़ी गत्ते की पेटियाँ, कागज़, नारियल के जटाजूट— उसने सारी चीज़ों का ढेर लगाना आरम्भ किया। यह देख यतिराज और भी अधिक भयभीत हो उठा। नक़ाबपोश ने उस कूड़े-करकट में आग लगा दी और क़ीमती चीज़ों की दो गठरियाँ लेकर बाहर चला गया। यतिराज के मुँह से चीख निकल गयी। दूसरे ही क्षण रामेश्वर हाँफता हुआ घर के अन्दर आया। उसके हाथ में वे दोनों गठरियाँ थीं, जिन्हें चोर चुराकर ले गया था।

रामेश्वर ने झट उन गठरियों को फ़र्श पर पटक दिया और रसोईघर में जाकर दो घड़े पानी भर लाया। पानी आग पर डालकर उसने आग

बुझायी और विमला एवं यतिराज के बन्धनों को खोला। इसके बाद वह बोला, "जीजाजी, चोर ये गठरियाँ लेकर भाग रहा था। मैंने उसका पीछा किया तो उसने डरकर ये गठरियाँ वहीं फेंक दीं और भाग गया।"

विमला ने क्रोध से आँखें तरेर कर अपने पति से कहा, "देखा, आज आपकी एकत्रित चीज़ों का कितना सुन्दर उपयोग हुआ है? आपके कारण आज मुझे और मेरे भाई को भी कष्ट उठाना पड़ा। यह टूटी हुई बोतल, यह रस्सी— सब कितनी उपयोगी चीज़ें हैं! अगर आज रामेश्वर न होता, तो इस कूड़े-करकट के साथ हम और हमारा घर सब जलकर भस्म हो जाता।"

यतिराज को आज पहली बार कुछ होश आया। वह पश्चाताप भरे स्वर में बोला, "आज उस नक़ाबपोश चोर ने मेरी आँखें खोल दी हैं।"

"जीजाजी, अब आप भविष्य में अपनी इस कूड़ा-बटोर आदत को नियंत्रण में रखियेगा और साथ ही अपनी अतिशय सावधानी से भी बाज़ आईयेगा।" रामेश्वर ने सलाह दी।

रामेश्वर की बात सुनकर यतिराज बोला, "अरे, तुमने सावधानी की बात कहकर मुझे अच्छी याद दिलायी। मैंने रात सोने से पहले सारी चिटकनियाँ अच्छी तरह लगा दी थीं। तब वह चोर हमारे घर में घुसा कैसे?"

विमला बीच में ही बोल पड़ी, "पिछले साल दीवाली पर जो फुलझड़ियाँ जलायी गयी थीं, तब आपने उनकी लोहे की सलाइयों को फेंकने नहीं दिया था और उन्हें छत में छिपाकर रख दिया था। चोर ने किवाड़ के छेदों में उन सलाइयों को डालकर चिटकनी खोल ली होगी। देखिये न, ये सलाइयाँ किवाड़ों के पास पड़ी हुई हैं।" यह कहकर विमला ने उन सलाइयों को लाकर अपने पति को दिखाया।

इस घटना ने यतिराज को बहुत कुछ सिखा दिया था। विमला अपने भाई के कार्य की सफलता पर बहुत खुश थी। अब यतिराज में एक परिवर्तन यह और हुआ कि वह इस बात की अतिशय सावधानी बरतने लगा कि घर में कोई भी अनावश्यक चीज़ एक क्षण को भी न रहे।
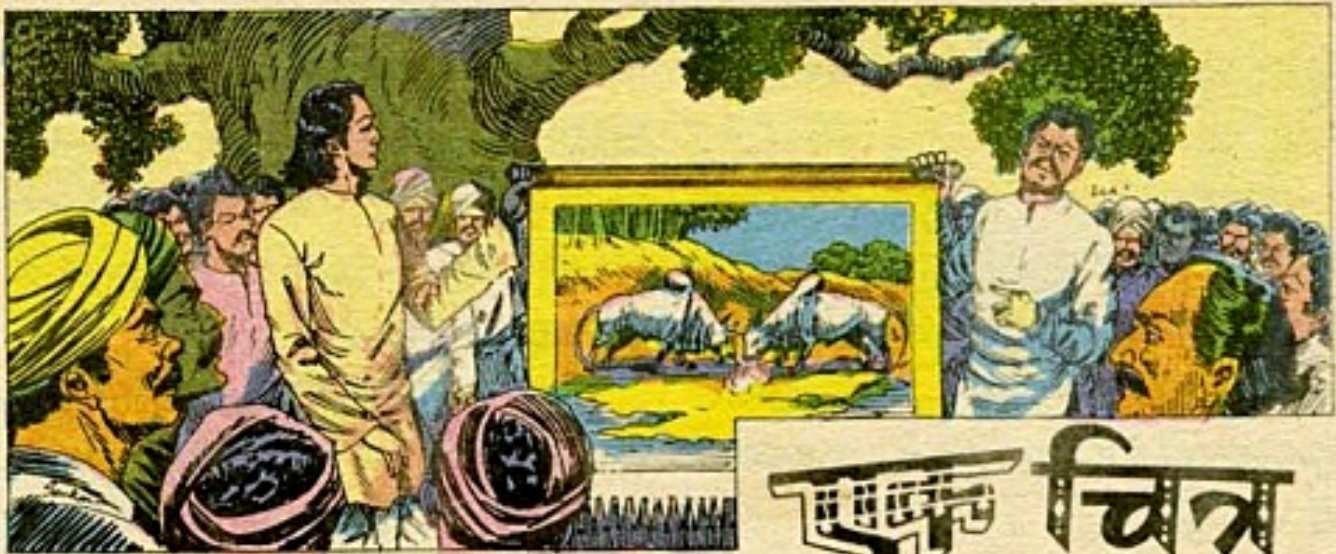
# एक चित्र

माधवशर्मा एक प्रसिद्ध चित्रकार था। नगीना शहर में उसके चित्रों की बड़ी प्रशंसा होती थी और उन्हें हाथों-हाथ ख़रीद लिया जाता था। बड़े-बड़े ज़मींदार और धनवान सेठ माधवशर्मा के चित्रों का मुँह-माँगा मूल्य देते थे।

एकबार माधवशर्मा ने एक चित्र बनाया। उसमें उसने लड़ते हुए दो बैलों को अंकित किया था। उस चित्र को देखकर कलाप्रेमी लोग झूम उठे और खुले दिल से माधवशर्मा की प्रशंसा करने लगे। उसने उस रात नगर के सभी कला-प्रेमीयों को दावत पर आमंत्रित किया। उसने इस चित्र को एक रेशमी वस्त्र पर चिपका कर उसे चन्दन की लकड़ी पर लटका दिया।

इसके बाद माधवशर्मा के मन में यह विचार आया कि इस अद्भुत चित्र को राजधानी ले जाया जाये और राजा के सामने मूल्यांकन के लिए रखा जाये। माधवशर्मा अपने साथ कुछ कलाप्रेमियों को लेकर राजधानी लखनपुर की ओर चल पड़ा। उन के मार्ग में एक गाँव आया तो उन्होंने वहाँ कुछ देर ठहरने का निश्चय किया।

माधवशर्मा के साथी कलाप्रेमियों में से एक मधुकर ने कहा, "शर्माजी, क्यों न आपके इस चित्र को गाँव के भोले लोगों के सामने प्रदर्शित किया जाये? उन्हें भी इस बात का ज्ञान मिलेगा कि आज उनके यहाँ कितने बड़े कलाकार का आगमन हुआ है!"

माधवशर्मा ने तुरन्त अपनी पेटी खोली और अपने संग्रह से लड़नेवाले दो बैलों का चित्र बाहर निकाल लिया। माधवशर्मा ने उस चित्र को ग्रामवासियों को दिखाकर कहा, "भाइयो, मेरे पास अनेक चित्रों का संग्रह है, पर उन चित्रों के अर्थ को तुम लोग नहीं समझ सकोगे। पर दो लड़ते हुए बैलों का यह चित्र मैं आपको दिखा रहा हूँ, इस चित्र का विषय रोज़ की घटना है।

गायत्री शर्मा

इसलिए आप इसके सौन्दर्य को अवश्य समझ सकोगे ।''

ग्रामवासियों ने उस चित्र को देखकर अपना कोई अभिमत प्रकट नहीं किया। वे मौन बने रहे। माधवशर्मा उनसे कुछ प्रश्न पूछने केलिए तत्पर हुआ कि तभी एक किसान युवक बलबीर खिलखिलाकर हँस पड़ा । यह देख माधवशर्मा को बड़ा क्रोध आया ।

माधवशर्मा ने बलबीर की तरफ़ आँखें तरेर कर पूछा, ''अरे ओ मूर्ख नवयुवक, तुम चित्रकला के बारे में कुछ जानते भी हो या यों ही खी-खी कर रहे हो? क्या इस चित्र में बैलों की लड़ाई का चित्रण सहज-स्वाभाविक नहीं हुआ है?''

''क्यों नहीं हुआ,महाश्य! पर यह कुछ अधिक ही सहज होगया है।'' किसान युवक बलबीर ने व्यंगपूर्वक उत्तर दिया ।

माधवशर्मा के एक और साथी दिवाकर ने बीच में दख़ल देते हुए बलबीर से कहा, ''ऐ युवक, तुम जानते हो, ये महानुभाव कौन है? ये महान कलाकार माधवशर्मा हैं । इनके चित्रों को ज़मींदार, सेठ ही नहीं, बड़े-बड़े राजा-महाराज भी मुँह माँगा दाम देकर ख़रीदते हैं । तुम इनके चित्र को देखकर जो हँस रहे हो, वह सचमुच ही बड़े शर्म की बात है ।''

बलबीर ने नम्र होकर कहा, ''महाशय, मैंने बैलों को लड़ते हुए अनेक बार देखा है । जब वे सिर झुकाकर एक-दूसरे के सींग गड़ाते हैं, तब उनकी पूँछ हवा में कोड़े की तरह तेज़ी से लहराती है । लेकिन इन चित्रकार महोदय ने तो इस चित्र में पूँछ को इस प्रकार दिखाया है, मानो वह लड़ते हुए बैल की पूँछ ही न हो, साधारण मुद्रा में खड़े बैल की लटकती हुई पूँछ हो ।''

उस समय तक चुपचाप खड़े सारे ग्रामवासी अब दिल खोलकर हँस पड़े । माधवशर्मा ने अपने हाथ के चित्र को बड़ी फुरती से लपेट कर पेटी में रख दिया ।

इसके बाद माधवशर्मा अपने सभी साथियों के साथ चुपचाप सिर झुकाये हुए उस गाँव से निकल गया ।

## १
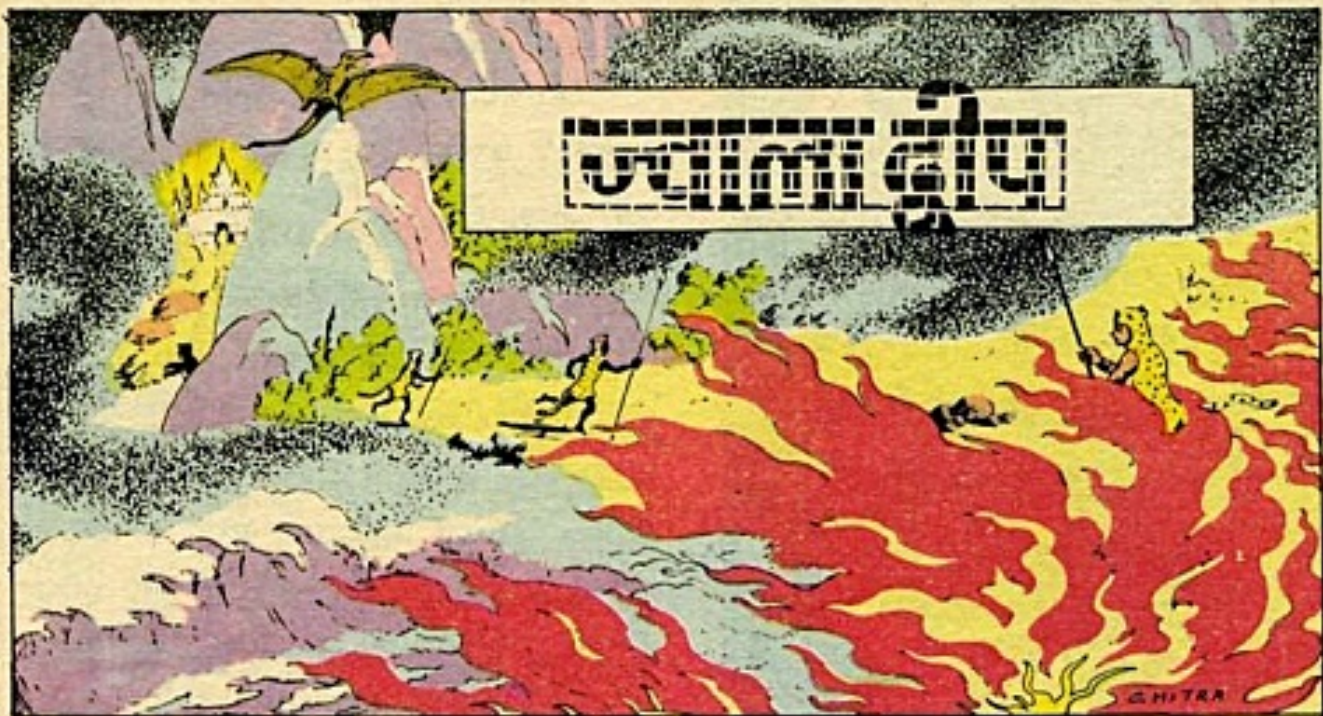
[ राजकुमारी कांतिमती ने चित्रसेन को बताया कि उसके पिता वीरसिंह को कपिलपुर के दुर्ग में कैद कर दिया गया है। चित्रसेन अपनी सेना लेकर कपिलपुर पहुँचा। उसने देखा, क़िले की बुर्जियों पर शत्रु-सैनिक और दो भयंकर पक्षी रक्षा के लिए तैनात हैं। अमरपाल ने सुझाव दिया कि उन भयंकर पक्षीयों के भय से मुक्त होने के लिए जलती हुई मशालें को काम में लाना होगा। आगे पढ़िये...]

अमरपाल के सुझाव से चित्रसेन पूर्ण सहमत हो गया। उसी दिन सुबह के समय अमरपाल ने भयंकर पक्षियों की झोंपड़ियों में आग लगाकर उनका सर्वनाश किया था। पर उग्राक्ष के मन में अब भी उन पक्षियों का आतंक छाया हुआ था। वह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि इन पक्षियों को समूल नष्ट किया जा सकता है! वास्तव में उसने इन पक्षियों के कारण बहुत बार नुक़सान उठाया था, यहाँ तक कि वह स्वयं इनके प्रहारों से ज़ख्मी हो चुका था, इसलिए उसका भय और सन्देह अकारण नहीं था। उग्राक्ष कुछ क्षण तो चुप रहा, फिर उसने कुछ बेचैन होकर पूछा, "जलती मशालें दिखाने पर क्या वे भयंकर पक्षी हम पर हमला नहीं करेंगे? वे पक्षी डरकर भाग जायेंगे, क्या यह बात सच है?"

"अरे मशालें कहाँ हैं?" अमरपाल ने उग्राक्ष की बात पर अधिक ध्यान न देकर चिल्लाकर पूछा। बात यह थी कि इस समय अमरपाल का

-सारा ध्यान उन दो पक्षियों पर केंद्रित था। सुबह की विजय ने उसमें जोश भर दिया था और अब वह किसी भी तरह इन बचे हुए दो पक्षियों को नष्ट कर देना चाहता था। उसने दुबारा चिल्लाकर कहा, "मशालें जल्दी लाओ!" तत्काल कुछ सैनिक तेल में डूबी हुई बड़ी-बड़ी मशालों को लिये हुए आगे आये।

अमरपाल ने उन मशालों को चित्रसेन को दिखाते हुए पूछा, "महाराज, आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा है। आपका संकेत पाते ही ये मशालधारी लोग अपनी मशालें जलाकर क़िले को घेर लेंगे। बाक़ी सैनिक दुर्ग पर आक्रमण कर देंगे।"

"अरे सुनो!" कहकर उग्राक्ष ने अपने राक्षस अनुचरों की ओर मुड़कर ताली बजायी।

"हाँ, महानायक! हम तैयार हैं। आज्ञा दीजिये!" कहकर कुछ राक्षस वीर उग्राक्ष के चारों तरफ़ फैल गये।

"तुम लोगों में से कुछ जवान विशाल वृक्षों को उखाड़कर उनसे क़िले के द्वार तोड़ दो! बाकी लोग कुदालें लेकर क़िले की दीवारों को नींव से उखाड़ दो!" उग्राक्ष ने अपने सेवकों को आदेश दिया। फिर वह चित्रसेन से बोला, "महाराज, हमें क़िले के केवल मुखद्वार से ही नहीं, बल्कि चारों तरफ़ से क़िले में घुसना चाहिए! ऐसी स्थिति में क़िले की बुर्जियों पर रहनेवाले शत्रु-सैनिक बिखर जायेंगे और एक जुट होकर हमारा सामना नहीं कर सकेंगे।..पर..उन भयंकर पक्षियों से हम बचे रहें, वे हमला न कर सकें, यह जिम्मेदारी अमरपाल की है!"

"उग्राक्ष, तुम चिन्ता न करो और दुर्ग-विजय की तैयारी करो! तुम्हारी रक्षा की सारी जिम्मेदारी मेरी है।" अमरपाल ने कहा और अपने अनुचरों को कुछ संकेत देने लगा।

"तुम जैसा एक तुच्छ मानव इस महाराक्षस की रक्षा करेगा?" यह कहकर उग्राक्ष ने दाँत पीसकर अपनी पाषाणी गदा उठायी।

"उग्राक्ष, ठहरो!" राजकुमारी कांतिमती आदेशपूर्ण स्वर में बोली, "मेरे पिता क़िले में क़ैद हैं। अगर तुम लोग यहाँ अपनी-अपनी शक्ति के प्रदर्शन में लग गये, तो तुम लोगों के तुमुल निनाद से मेरे पिता को शत्रु से भय पैदा हो सकता है। फिर वह चित्रसेन की ओर मुड़कर बोली

"महाराज, आपने मेरी मदद का वचन दिया है। आपको स्मरण है न ?"

"हाँ, राजकुमारी!" चित्रसेन ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी, फिर उग्राक्ष से बोला, "उग्राक्ष, इसमें संदेह नहीं कि तुम राक्षसों के नायक हो! लेकिन, तुम्हें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि तुम्हें अपनी वीरता अमरपाल पर नहीं, बल्कि दुर्ग में रहनेवाले शत्रु पर और दुर्ग की रक्षा कर रहे उन भयंकर पक्षियों पर दिखानी है।"

चित्रसेन के मुँह से ये बातें सुनकर उग्राक्ष सावधान हुआ और उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी, "सुनो ! देखते क्या हो? मेरे आदेशों का पालन करो !"

उग्राक्ष का संकेत पाकर राक्षस सैनिकों ने पेड़ों को जड़-सहित उखाड़ लिया और उनकी टहनियों एवं पत्तों को तोड़ गिराया। इसके बाद वे उन्हें अपने कंधों पर रखकर गर्जन करते हुए क़िले की तरफ़ दौड़ पड़े। उनके पीछे चित्रसेन के कुछ सैनिक जलती हुई मशालों को लेकर दौड़ पड़े।

इसके बाद कुछ ही क्षणों में क़िले के समीप भयानक कोलाहल होने लगा। इधर चित्रसेन एवं राजकुमारी कांतिमती अपने-अपने घोड़ों पर आगे बढ़ने लगे। वे सैनिकों में उत्साह भर रहे थे। उग्राक्ष भी अपनी विशाल पाषाणी गदा को हवा में लहराते हुए गरज उठा।

चित्रसेन तथा उग्राक्ष के सैनिक क़िले की दीवार के समीप पहुँच गये। तभी क़िले की बुर्जी पर से उन पर बाणों की वर्षा होने लगी। चित्रसेन के सैनिक भी शत्रु पर बाणों की वर्षा करने लगे। इस समय बुर्जी के सैनिक अचानक हुए इस हमले से अपनी और दुर्ग की रक्षा करने में लगे थे और चित्रसेन के सैनिक प्राणों की परवाह न करके दुर्ग पर कब्जा करने का प्रयास कर रहे थे। दोनों दलों के बीच भयंकर युद्ध होता रहा। दोनों दल अपने प्राणों का मोह छोड़कर विजय पाने की आकांक्षा से लड रहे थे। सभी सैनिक अपने-अपने राजा और सेनापति के प्रति इमानदार थे। इस प्रकार जो घनघोर युद्ध चल रहा था, इस आपाधापी में कुछ राक्षस सैनिक क़िले के द्वार के समीप पहुँच गये और अपने कंधों से पेड़ों के विशाल तनों को उतार कर किवाड़ों पर आघात

करने लगे। कुछ अन्य राक्षस कुदालों से दीवारों को तोड़ गिराने का प्रयत्न करने लगे।

जब यह सब चल रहा था कि अचानक ऊपर बादल गरजने जैसी भयंकर आवाज़ हुई। सब भयचकित होकर इधर-उधर देखने लगे। वे दोनों भयंकर पक्षी वात्याचक्र की तरह वायुवेग से सैनिकों की तरफ़ आने लगे। अमरपाल ने अपने हाथ की जलती हुई मशाल ऊपर कर ली और उसे पक्षियों की दिशा में लहराता हुआ सैनिकों को चेतावनी देने लगा, "वीरो, डरना नहीं! अपनी मशालें ऊँची रखो और उन्हें पक्षियों का निशाना बनाओ! तुम लोग जानते हो, पक्षी आग से डरते हैं। अगर हमने इन पक्षियों का संहार नहीं लिया तो याद रखो, ये हमारी जान लेकर छोड़ेंगे। तुम लगातार पक्षियों पर मशाले फेंकते जाओ, मशालों की आग में उनके पंख झुलेस जायेंगे और फिर न उड सकेंगे और न हम पर हमला कर सकेंगे। यहीं हमारी अंतिम विजय है। इस बार हम अपने प्रयत्न में विफल होंगे तो फिर कहीं के न रह जायेंगे।" अमरपाल का आदेश पाते ही अनेक मशालें आकाश में लहराने लगीं।

भयंकर पक्षियों का वेग रुक गया। वे सैनिकों पर हमला करना छोड़कर आकाश में ऊपर उठने लगे। उन पर सवार बाघचर्मधारियों ने अपने अंकुशों को पक्षियों की गरदन में चुभोया और उन्हें सैनिकों पर हमला करने के लिए उकसाने लगे। पर, नीचे जलती मशालों को देख पक्षी अपने सवारों के नियंत्रण में न रहे। एक पक्षी अंकुश के आघात से भड़क उठा और आसमान में कलाबाजियां खाने लगा। पक्षी पर सवार योद्धा ने अपना भाला कसकर पकड़ लिया, पर वह पक्षी पर बैठा न रह सका और चीत्कार करता हुआ शत्रुसेना के बीच गिर पड़ा। पक्षियों के सवारों को नीचे गिरा देख सैनिकों का उत्साह उमड़ पड़ा। तब चित्रसेन के सैनिक उल्लास में भरकर कोलाहल करने लगे कि दूसरा सवार भी इसी तरह गिर पड़ा। देखते-देखते दोनों भयंकर पक्षी आकाश में अदृश्य हो गये।

भयंकर पक्षियों की सहायता पर पूरी तरह निर्भर नागवर्मा के सैनिक उन्हें अदृश्य होता देखकर अपनी हिम्मत खो बैठे और डरकर दुर्ग की बुर्जियों से कूद पड़े। वे बचाव के लिए राजमहल की तरफ़ दौड़ने लगे। बुर्जियों पर से

CHITRA
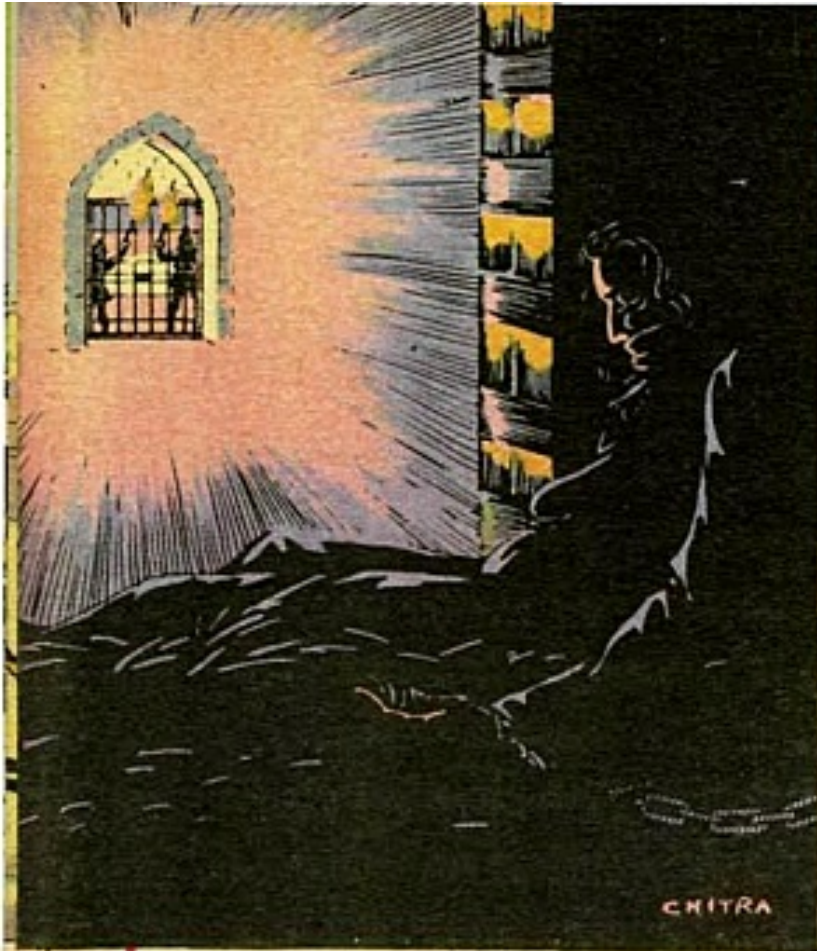
बाण-वर्षा के रुकते ही चित्रसेन के सैनिकों ने दुर्ग की दीवारों तक पहुँचकर कुछ ही क्षणों में दुर्ग के द्वार को तोड़ डाला। इस बीच कुदालों से दीवार पर प्रहार कर रहे राक्षस दुर्ग की दीवार में एक स्थान पर छेद करके क़िले के अन्दर घुस गये। किले में प्रवेश करने के बाद राक्षस वीर और चित्रसेन के सैनिक शत्रुसैनिकों को गाजर-मूली की भांति काटने लगे।

चित्रसेन को राजमहल पर अधिकार करने के लिए अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ा। नागवर्मा के अधिकांश सैनिक प्राणों के मोह से भाग निकले या उन्होंने चित्रसेन को समर्पण कर दिया। जो सैनिक हठपूर्वक राक्षसों का सामना कर रहे थे, वे उनके हाथों मारे गये।

इस प्राकर दुर्ग और राजमहल पर चित्रसेन का पूरा अधिकार होगया। अब उन्हें इस बात का पता लगाना था कि महाराजा वीरसिंह को बन्दी बनाकर कहाँ पर रखा गया है? चित्रसेन को इस बात का सन्देह भी था कि कहीं शत्रुसैनिक राजा वीरासिंह को किसी गुप्त मार्ग से दुर्ग के बाहर न ले गये हों? अथवा महाराजा वीरसिंह को मार डाला हो इस बात की कल्पना मात्र से चित्रसेन का दिल दहल उठा। फिर भी उनके मन के किसी कोने में राजा वीरसिंह के जीवित रहने की आशा की किरण कौंध रही थीं। राजकुमारी कांतिमती को पूरा विश्वास था कि उसके पिता राजमहल की ही किसी अंधेरी कोठरी में क़ैद हैं। उसने सैनिकों को महाराजा को उन कोठरियों में एवं भूगर्भ-गृहों में तलाश करने की आज्ञा दी।

राजकुमारी का आदेश पाकर सैनिक तथा कुछ राक्षस भी राजमहल के सभी भागों में महाराजा वीरसिंह की खोज करने लगे। हर सैनिक यह चाहता था कि वह महाराजा वीरसिंह को खोज निकाले और राजकुमारी कांतिमती तथा राजा चित्रसेन का प्रशंसा-पात्र बने। सैनिक दलों में बंटकर महल के अलग-अलग भागों में किसी गुप्त-गृह की खोज करते घूमने लगे। कुछ सैनिक एक स्थान से गुज़र रहे थे कि उन्हें अंधेरे से भरे एक भूगर्भ-गृह से किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी। सैनिकों ने मशालों के साथ उस गृह में प्रवेश किया। वहाँ एक कक्ष था। उसके छड़ोंवाले किवाड़ पर ताला लगा हुआ था। कक्ष अंधकार से भरा था। सैनिकों ने छड़ों के बीच से

किसी तरह मशालों को अन्दर किया, तब उनकी रोशनी में उन्होंने दूर दीवार से सटी एक अस्पष्ट-सी. मानव-आकृति को देखा ।

"ये ही महाराजा वीरसिंह हैं ।" एक सैनिक ने चिल्लाकर कहा । दूसरे ही क्षण राजमहल में चारों तरफ़ फैले सैनिक और राक्षस वहाँ आगये । पर कोई भी उस कोठरी में प्रवेश नहीं कर सका । सबसे पहले ज़रूरी था कि कोठरी में पड़े उस ताले को तोड़ा जाये ।

सैनिकों का कोलाहल सुनकर चित्रसेन एवं कांतिमती भी वहाँ आगये । उन्होंने भी मशालों की रोशनी में उस अस्पष्ट-सी मानव-आकृति को देखा । कराह की आवाज़ भी सुनी । इस पर उनका विश्वास बढ़ गया कि हो न हो, अवश्य ही ये राजा वीरसिंह ही है । इस अंधेरी कोठरी में राजा के बिना और किसी को क्यों बन्दी बनाकर रखेंगे । आखिर इनके अलावा नागवर्मा का दुश्मन और कौन है ?

"तुम सब यहाँ क्या कर रहे हो? पहले ताला तोड़ो !" चित्रसेन ने आदेश दिया ।

सैनिक कुदाल लेकर ताला तोड़ने का प्रयत्न करने लगे । बड़े नारियल के बराबर के उस ताले में जंग लग गयी थी । कुदालों के प्रहारों का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था । ठन्न-ठन्न की आवाज़ गूंज रही थी । एक सैनिक तो इस प्रयत्न में हाँफ गया था । वह बोला, "महाराज़, जंग लगे इस ताले को तोड़ना संभव नहीं है । चाबी मिल जाने पर ही इसे खोला जा सकता है ।"

"उस चाबी के लिए तुम राजद्रोही नागवर्मा के आश्रय में जाओ!" कहकर चित्रसेन उस सैनिक के हाथ से कुदाल खींचने को हुआ । तभी गर्जन करता उग्राक्ष वहाँ पर आ धमका । उसे देखकर कांतिमती बोली, "उग्राक्ष, मेरे पिताजी को नागवर्मा ने इस अंधेरी कोठरी में बन्द कर रखा है । तुम शीघ्र इस ताले को तोड़कर हमारी मदद करो!"

"अरे, यह भी कोई काम है?" कहकर उग्राक्ष सैनिकों को इधर-उधर ढकेलता हुआ आगे बढ़ा । उसने ताले को मुट्ठी में भरकर जोर से खींचा । पर वह खुला नहीं । तब उसने दोनों हाथों से लोहे की छड़ों को पकड़कर ज़ोर से खींचा । दरवाजे की छड़ें चर्र-मर्र कर उठीं, पर ताला वैसा ही फँसा रहा ।

"नागवर्मा और उसके अनुचर विचित्र लोग हैं। उन्होंने किवाड़ों स कहीं अधिक मज़बूत ताला लगाया है!" यह कहकर उग्राक्ष ने बड़ी सख्ती से लोहे की छड़ों को पकड़कर खींच डाला। वे छड़ें मोमबत्तियों की तरह मुड़ गयीं। सलाख़ों के बीच बनी जगह से मशालधारी सैनिक अन्दर पहुँचे। उन्होंने मशालों की रोशनी में देखा, एक मनुष्य हथकड़ी-बेड़ियों में बँधा पड़ा है। उसके मुँह पर एक कपड़ा लिपटा हुआ था। वह पीड़ा के कारण कराह रहा था। वह राजा वीरसिंह ही थे।

अपने पिता को इतनी दयनीय हालत में देखकर कांतिमती के सिर से लेकर पैर तक कंपकंपी छूट गयी। वह "पिताजी!" कहकर चिल्लायी और उनके पास दौड़ी। चित्रसेन ने भी कांतिमती के साथ उस अंधेरे कमरे में प्रवेश किया और राजा वीरसिंह के मुँह पर बंधे वस्त्र को खोल दिया। उग्राक्ष ने उनके हाथों और पैरों की बेड़ियों को तोड़ डाला।

"बेटी, मैंने कभी नहीं सोचा था कि इस जन्म में मैं पुनः तुम्हें देख पाऊँगा।" यह कहकर राजा वीरसिंह दीवार से सटे-सटे ही लुढ़क पड़े। दुष्ट नागवर्मा के हाथों उन्होंने अनेक यंत्रणाएँ झेली थीं। इतने में एक सैनिक महाराजा के बैठने के लिए एक आसन ले आया। दूसरे सैनिक ने प्यास बुझाने के लिए एक जलपात्र आगे किया।

पानी पीकर राजा वीरसिंह कुछ स्वस्थ हुए। तब आसन पर बैठकर उन्होंने कांतिमती से पूछा, "बेटी, द्रोही नागवर्मा मर गया है या ज़िंदा है? या उसे बन्दी बना लिया गया है ? जल्दी बताओ, मैं शीघ्र उस दुष्ट एंव विश्वास घाती का समाचार जानना चाहता हूँ। यदि वह मार डाला गया हो, तो जल्दी मुझे वह खुश खबरी सुनाओं"

कांतिमती ने बोलने का प्रयत्न किया, फिर ससंकोच चित्रसेन की तरफ़ दृष्टि डाली। चित्रसेन ने आगे बढ़कर कहा, "महाराज, मेरा नाम चित्रसेन है। संभवतः आपने मेरे बारे में और मेरे राज्य के बारे में कुछ सुना हो! मेरा साथी यह राक्षस उग्राक्ष है। नागवर्मा मेरे पिता के राज्य धवलगिरि पर आक्रमण करने गया है। उसे रास्ते में ही रोककर, अगर संभव हो तो उसका संहार करने के लिए अपनी विशाल सेना को मैंने अपने सेनापति के नेतृत्व में भेजा है।" (क्रमशः)

# प्राणों का मूल्य

दृढ़व्रती विक्रमार्क वृक्ष के पास लौट आये। वृक्ष से शव उतार कर कंधे पर डाला और सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगे। तब शव में वास करनेवाले बेताल ने कहा, "राजन, अन्धकार से घिरे इस भयानक श्मशान में, जहाँ सियार चिल्ला रहे हैं और उल्लू बोल रहे हैं, आप अपने प्रयासों में असफल होते हुए भी अपने संकल्प की सिद्धि के लिए जितनी दृढ़ता से लगे हुए हैं, वह सचमुच प्रशंसनीय है। आप अपने इस अध्यवसाय में, हो सकता है, सफलता प्राप्त कर लें, पर अगर आपमें केदारनाथ वैद्य की भाँति विवेक और व्यावहारिकता का अभाव रहा तो आपको अपने श्रम का पूरा फल प्राप्त नहीं होगा। मैं आपको इस युवक वैद्य की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये!"

बेताल ने कहानी सुनाना आरंभ किया:

चंद्रपुर के राजा चंद्रसिंह के एक ही संतान थी, वह भी कन्या। नाम था कुमुदिनी। राजकुमारी

## बेताल कथा

कुमुदिनी ने किशोरावस्था को पार कर जब युवावस्था में पदार्पण किया, तब वह एक विचित्र व्याधि का शिकार हो गयी ।

राजवैद्यों ने राजकुमारी की अनेक प्रकार से चिकित्सा की, पर वे अपने प्रयत्न में सफल न हो सके । अन्य देशों से आये वैद्य भी उस व्याधि की चिकित्सा नहीं कर पाये । राजकुमारी दिन पर दिन कृश होती जा रही थी ।

राजा चंद्रसिंह का विश्वास टूट गया और अब वे यह सोचकर उदास रहने लगे कि उनकी पुत्री की चिकित्सा अब संभव नहीं है । ऐसी स्थीति में चंद्रपुर के मंत्रीयों ने राजा को परामर्श दिया, "महाराज, आप पूरे राज्य में और राज्य के बाहर इस बात का ढिंढोरा पिटवा दीजिये कि जो व्यक्ति राजकुमारी को रोगमुक्त कर स्वस्थ बनायेगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह होगा और उसे आधा राज्य पुरस्कार में दिया जायेगा ।"

राजा चंद्रसिंह ने अपने राज्य तथा आसपास के देशों में भी इस आशय का ढिंढोरा पिटवा दिया । यह ढिंढोरा सुनकर अनेक वैद्य चंद्रपुर में आये । उन्होंने राजकुमारी की जाँच की । कुछ वैद्य तो व्याधी का निदान ही नहीं कर पाये, कुछ निदान करने के बाद भी अपने प्रयत्न में असफल रहे ।

राजकुमारी कुमुदिनी का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता चला गया । राजा चंद्रसिंह को चिन्ता खाने लगी । एक दिन केदारनाथ नाम का एक युवा वैद्य चंद्रपुर में आया । उसने राजकुमारी की नाड़ी तथा रोग के लक्षणों की बारीकी से जाँच की । उसने इस बात का पता लगा लिया कि व्याधि किस किस्म की है?

राजकुमारी को देखने के बाद केदारनाथ ने राजा चंद्रसिंह से कहा, "महाराज, मैं राजकुमारी को निरोग कर सकता हूँ । पर इस व्यधि की चिकित्सा के लिए एक विशेष प्रकार की जड़ी-बूटी की आवश्यकता है । वह जड़ी -बूटी नाग-पर्वत के समीप के नाग बन में उपलब्ध हो सकती है । आप मुझे उस बन में जाने की अनुमति दीजिये, ताकि मैं औषधि के लिए वह जड़ी बूटी ला सकूँ ।"

राजा चंद्रसिंह ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी अनुमति दी । केदारनाथ ने नाग बन में प्रवेश

करके सर्वत्र उस जड़ी-बटी की खोज की। एक स्थान पर वह बूटी उसे मिल गयी। राजकुमारी के प्राणों की रक्षा के लिए वह जड़ी-बूटी पर्याप्त थी। केदारनाथ ने और अधिक बूटी प्राप्त करने के लिए अपना समय नष्ट नहीं किया।

जड़ी-बूटी लेकर केदारनाथ उत्साहपूर्वक चंद्रपुर की ओर रवाना हुआ। जब वह राजमहल के निकट पहुँचा तो उसने देखा कि महल के पास वाले राजोद्यान में काम करनेवाला बूढ़ा माली शंकर बड़ी ज़ोर की आह भरकर नीचे गिर गया। तत्काल कुछ सेवकों ने माली शंकर को चारों तरफ़ से घेर लिया।

केदारनाथ ने माली की नाड़ी की जाँच की। वह समझ गया कि माली चन्द मिनटों का मेहमान है। आश्चर्य की बात यह थी कि राजकुमारी जिस बीमारी का शिकार थी, लगभग उसी बीमारी से यह बूढ़ा माली भी ग्रस्त था। जब केदारनाथ ने रोग का निदान कर लिया तो उसने क्षण भर की देर भी न की। वह राजकुमारी के लिए नाग-बन से जो बूटी लाया था, उसने उसे बड़ी फुरती से पीसा और पानी में घोलकर बूढ़े को पिला दिया।

कुछ ही देर में बूढ़े शंकर ने आँखें खोल दीं। वह उठकर बैठ गया और उसने अपने प्राणों के रक्षक केदारनाथ को हाथ जोड़कर प्रणाम किया, तब कहा, "बेटा, चिरंजीवी बनो! यशस्वी बनो!"

इस सारी घटना का विवरण कुछ ही देर में राजमहल में पहुँचा। इधर केदारनाथ ने सोचा कि राजकुमारी कुमुदिनी के लिए लायी गयी जड़ी-बूटी तो खर्च हो गयी है। अब उसे दुबारा नाग बन में जाकर वही बूटी ले आनी चाहिए। पर

इस बार उसे इस दुर्लभ बूटी को प्राप्त करने में कुछअधिक समय भी लग सकता था। उचित यहीहोगा कि महाराजा चंद्रसिंह को सारा वृत्तान्त बता कर तब वह बन की ओर प्रस्थान करे। ऐसा निश्चय करके केदारनाथ राजा के दर्शनार्थ गया।

राजा चंद्रसिंह पहले ही माली वाली घटना से परिचित थे। पर वे यह नहीं जानते थे कि केदारनाथ ने राजकुमारी के लिए लायी गयी बूटी खर्च कर दी है। जब उन्होंने केदारनाथ के मुँह से सारा वृत्तान्त सुना तो क्रोधित हो उठे और डपटकर बोले, "दुष्ट, पापी, यह जानते हुए भी कि राजकुमारी मौत से लड़ रही है, तुमने उसके लिए लायी गयी बूटी को बूढ़े माली को पिला दिया! क्या तुम्हारी दृष्टि में राजकुमारी से भी अधिक उस बूढ़े माली के प्राण मूल्यवान थे। यह जानते हुए भी कि बूटी केवल एक व्यक्ति की मात्रा थी, तुमने उसका उपयोग एक नाचीज़ बूढ़े के लिए कर दिया। अब तुम फिर से वह बूटी लाने के लिए नाग-बन जाओगे! तुमने देश की राजकुमारी के प्राणों के साथ खिलवाड़ किया है। यह तुम्हारा एक अक्षम्य अपराध है।"

राजा ने राजसैनिकों को बुलाकर आदेश दिया, "जाओ, इस द्रोही को तुम लोग फाँसी पर चढ़ा दो!"

राजा चंद्रसिंह का आदेश पाकर राजसैनिकों ने केदारनाथ के हाथ बाँध दिये और उसे फाँसी के तख्ते पर चढ़ाने का उपक्रम करने लगे। तब केदारनाथ ने राजा से निवेदन किया, "महाराज, आप जल्दबाज़ी कर रहे हैं। मैं एक हफ़्ते के अन्दर फिर से वह जड़ी-बूटी ला सकता हूँ। इस बीच राजकुमारी के प्राणों के लिए कोई ख़तरा नहीं है। मैं अपने गुरुदेव की शपथ लेकर आपको यह वचन देता हूँ कि मैं राजकुमारी को स्वस्थ कर दूँगा।"

केदारनाथ की अनुनय-विनय के बाद भी राजा चंद्रसिंह का क्रोध शान्त नहीं हुआ। राजसैनिक केदारनाथ के गले में फाँसी का फन्दा लगाने जारहे थे कि बूढ़ा माली शंकर दौड़कर वहाँ आ पहुँचा और राजा के चरणों में गिरकर गिड़गिड़ाने लगा—"महाराज, आपकी दृष्टि में मुझ ग़रीब बूढ़े के प्राणों का कोई मूल्य नहीं है। पर छोटी आयु के इस अत्यन्त विद्वान वैद्य के

प्राण अत्यन्त मूल्यवान हैं। इन्होंने व्यर्थ ही उस जड़ी बूटी को मेरे लिए नष्ट किया। आप इन्हें मुक्त कर दें और मुझे फाँसी पर चढ़वा दें!"

माली शंकर की बात सुनकर केदारनाथ ने आपत्ति उठाकर कहा, "महाराज, मैंने इस बूढ़े के प्राण इसलिए नहीं बचाये थे कि यह फाँसी के तख़्ते की बलि हो जाये। आप गंभीरतापूर्वक सोचिये और मुझे नाग-बन से पुनः वह बूटी लाने का अवसर प्रदान कीजिये। मुझे विश्वास है कि उस जड़ी-बूटी के पान से राजकुमारी अवश्य स्वस्थ हो जायेंगी। यदि आपको मेरी बात का भरोसा न हो तो आप जो कर रहे हैं, वही कीजिये!"

राजा चंद्रसिंह असमंजस में पड़ गये। वे विचार करने लगे कि क्या किया जाये! तभी उनके मंत्रियों ने उन्हें सलाह दी, "महाराज, इस युवक वैद्य को एक अवसर और दिया जाये। संभवतः यह हमारे हित में हो।" राजा ने मंत्रियों का परामर्श मानकर केदारनाथ को फाँसी की सज़ा से मुक्त कर दिया।

इसके बाद केदारनाथ नाग-बन में पहुँचा और जड़ी-बूटी लेकर वापस आगया। राजा को दिये गये वचन के अनुसार उसने राजकुमारी कुमुदिनी की चिकित्सा आरंभ कर दी। दीर्घकाल की व्याधि दो दिन के अन्दर कम होने लगी। एक सप्ताह के अन्दर राजकुमारी चलने-फिरने लगी और सबके साथ प्रसन्नतापूर्वक बातचीत करने लगी।

राजकुमारी को स्वस्थ पाकर राजा चंद्रसिंह प्रसन्न हो उठे। उन्होंने अपने वचन के अनुसार केदारनाथ को आधा राज्य और विवाह में राजकुमारी का हाथ देने का निश्चय किया। राजा ने केदारनाथ को लिवाकर लाने के लिए एक सुन्दर पालकी अपने मंत्रियों के साथ अतिथि-गृह में भेजी।

प्रधान मंत्री कुछ अनुचरों एवं परिचारकों के साथ जब अतिथि-गृह में पहुँचा तो केदारनाथ वहाँ नहीं था। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि केदारनाथ सूर्योदय के पूर्व ही अतिथि-गृह छोड़कर चला गया है।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा, "राजन, यह तो सच है कि केदारनाथ वैद्य चिकित्सा-विज्ञान में अपनी सानी नहीं रखता था। इसीलिए

राजकुमारी की जिस व्याधि का इलाज बड़े-बड़े वैद्य नहीं कर सके, उसे उसने एक जड़ी-बूटी से ठीक कर दिया । केदारनाथ को अत्यन्त मेधावी और विशिष्ट प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति मानना एक संगत बात है । पर क्या यह आश्चर्यजनक नहीं लगता कि उसने राजकुमारी और अर्धराज्य को इतनी सरलता से छोड़ दिया! केदारनाथ अपने को इन दो मूल्यवान उपहारों के योग्य न समझता हो, ऐसा तो दिखाई नहीं देता । फिर वह कौन-सी चीज़ थी, जिसने उससे यह त्याग करवाया ! अगर आप इस सन्देह का समाधान जानकर भी न करेंगे, तो आपका सिर फूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा ।"

उत्तर में विक्रमार्क ने कहा, "यह बात पूरी तरह स्पष्ट है कि केदारनाथ ने स्वार्थ या प्रलोभन से प्रेरित होकर राजकुमारी का इलाज नहीं किया। यदि वह स्वार्थी होता तो कठिन परिश्रम के पश्चात जिस जड़ी बूटी को उसने राजकुमारी के लिए प्राप्त किया था, उसका उपयोग बूढ़े माली की प्राण-रक्षा के लिए न करता । वह सर्वप्रथम और सर्वोपरि रूप से एक वैद्य था । वैद्य का सारा ज्ञान उसकी चिकित्सा में निहित है । यह अप्रासंगिक है कि वह कितना व्यवहार कुशल या दुनियादार था । राजा चंद्रसिंह अत्यन्त स्वार्थी थे । अपनी बेटी के अलावा वे किसी दूसरे प्राणी के प्राणों का मूल्य नहीं जानते थे । उनकी नज़रों में माली के प्राणों का मूल्य कौड़ी बराबर था । इसलिए वे केदारनाथ को मौत के घाट उतारने के लिए तैयार होगये । केदारनाथ ने समझ लिए कि ऐसे स्वार्थी राजा का जामाता बनने पर उसे अपनी विद्या को ताक़ पर रख देना होगा । न वैद्य रहेगा, न उसकी वैद्यक । केदारनाथ जानता था कि धर्मशास्त्रों में मानव की प्राण-रक्षा का कितना महत्व है । उसने अपने धर्म का पालन किया और इसीलिए वह राजकुमारी के रोगमुक्त होते ही राजा से विदा तक लिये बिना चुपचाप वहाँ से अपने गाँव की ओर चला गया ।"

इसप्रकार राजा के मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पुनः वृक्ष पर जा बैठा ।

(कल्पित)

# छोटा बादल

त्रिगर्त देश के सभी निवासी कृषक ही थे। वहाँ की प्रजाओं का सुख-सन्तोष वरुणदेव एवं उनके द्वारा भेजेजानेवाले मेघों पर ही निर्भर रहता था। त्रिगर्त देश धन-धान्य से भरपूर था।

त्रिगर्त की प्रजा बड़ी धर्मनिष्ठ थी। वह अनेक देवी-देवताओं की पूजा किया करती थी। पर न जाने क्यों, वह वरुण देव एवं मेघों की आराधना नहीं करती थी। कुछ साल बाद मेघ उस देश की प्रजाओं से एकदम असन्तुष्ट हो उठे।

एक बार की बात है। दूरवर्ती किन्हीं प्रदेशों में मेघराज ने मेघों की एक सभा बुलायी। सारे मेघ एकत्रित हुए और फिर सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि त्रिगर्त देश पर किसी मेघ को नहीं बरसना है, वहाँ वर्षा की एक बूंद भी नहीं गिरनी चाहिए।

इस निर्णय के परिणाम स्वरूप त्रिगर्त में उस वर्ष वर्षाऋतु में भी पानी नहीं बरसा। वहाँ की प्रजाएँ आँखें फाड़-फाड़कर आकाश की ओर ताकने लगीं। आसमान में दूर तक मेघ का एक भी टुकड़ा नहीं था। प्रजा व्याकुल रहने लगी। उनकी व्यथा देख मेघ अत्यन्त प्रसन्न हुए।

पर अचानक एक दिन उन मेघों की प्रसन्नता में एक विघ्न आ उपस्थित हुआ। एक छोटा बादल अन्य मेघों को सूचित किये बिना ही त्रिगर्त देश में गया और थोड़ी -सी वर्षा करके चुपचाप लौट आया।

त्रिगर्तदेश के लोगों की खुशी का पारावार न रहा। वे यह सोचकर आनन्द मनाने लगे कि "अहा! अब वर्षाऋतु आरंभ होगयी है।" उन लोगों ने बीज बो दिये।

इस बीच बड़े-बड़े मेघों ने उस छोटे बादल को खरी-खोटी सुनाते हुए कहा, "अरे बेटा, तूने यह क्या किया? आख़िर इस काम के पीछे तेरा उद्देश्य क्या था? हम सबने जब यह निर्णय लिया

२५ वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

था कि त्रिगर्त देश पर पानी की एक बूंद भी नहीं बरसनी चाहिए, तब तू त्रिगर्त देश पर जाकर अपना जल क्यों बरसा आया?"

"मेघोंदादा, आप लोग मुझे व्यर्थ ही मूर्ख समझ रहे हैं, पर मैंने थोड़ी-सी रिमझिम करके त्रिगर्त देश के लोगों के बचाकर रखे हुए बीजों को मिट्टी में मिलवा दिया है। क्या यह छोटी-सी बात भी आपकी समझ में नहीं आयी ?" छोटे बादल ने कहा ।

इसके बाद त्रिगर्त देश की प्रजा की दुर्दशा को देखने के विचार से सारे बड़े मेघ खुश होते हुए उस देश की ओर चल पड़े। वहाँ की प्रजा में त्राहि-त्राहि मची हुई थी सारे लोग मेघों की ओर टकटकी बांधकर देखते तथा वरुणदेव एवं मेघों को प्रणाम करके विलाप करते ।

उस देश की प्रजाओं की यह दुरवस्था देखकर बड़े बादलों का दिल पसीज उठा। वे छोटे बादल को डपटकर बोले, "अरे बच्चे, तुम बड़ों से कहे बिना इस तरह की शरारत मत किया करो!"

इसके बाद सब मेघ उमड़ पड़े और उन्होंने त्रिगर्त देश पर मूसलाधार वर्षा की। वर्षा सुख छाया ही , मेघों को भी बड़ा संतोष मिला ।

त्रिगर्त देश की प्रजाओं को इस बात का अनुभव हुआ कि वरुणदेव और मेघों ने उनकी प्रार्थना सुनी । तब से वहाँ के लोग बराबर वरुणदेव एवं मेघों की पूजा करने लगे। इसके बाद त्रिगर्त देश में कभी अकाल नहीं पड़ा। वहाँ की भूमि सदा शस्य-श्यामल बनी रही ।

पर यह बात बूढ़े बादल नहीं समझ पाये कि इस सारी घटना का श्रेय छोटे बादल को है । अगर वह अयाचित रूप में थोड़ा-सा पानी बरसाने की शरारत नहीं करता, तो बड़े मेघ अपने निर्णय पर अटल रहकर कभी पानी नहीं बरसाते। छोटे बादल के द्वारा पानी पाकर त्रिगर्त के लोग जो अपनी फ़सल बो चुके थे, उसके नष्ट होने की संभावना से वे और अधिक दीन हो उठे और उन्होंने वरुणदेव एवं मेघों की आराधना आरंभ की । बड़े मेघों की डांट-डपट सुनकर छोटा बादल चुप रह गया। वह यह नहीं समझ पाया कि वह एक बड़े काम का निमित्त बना है।
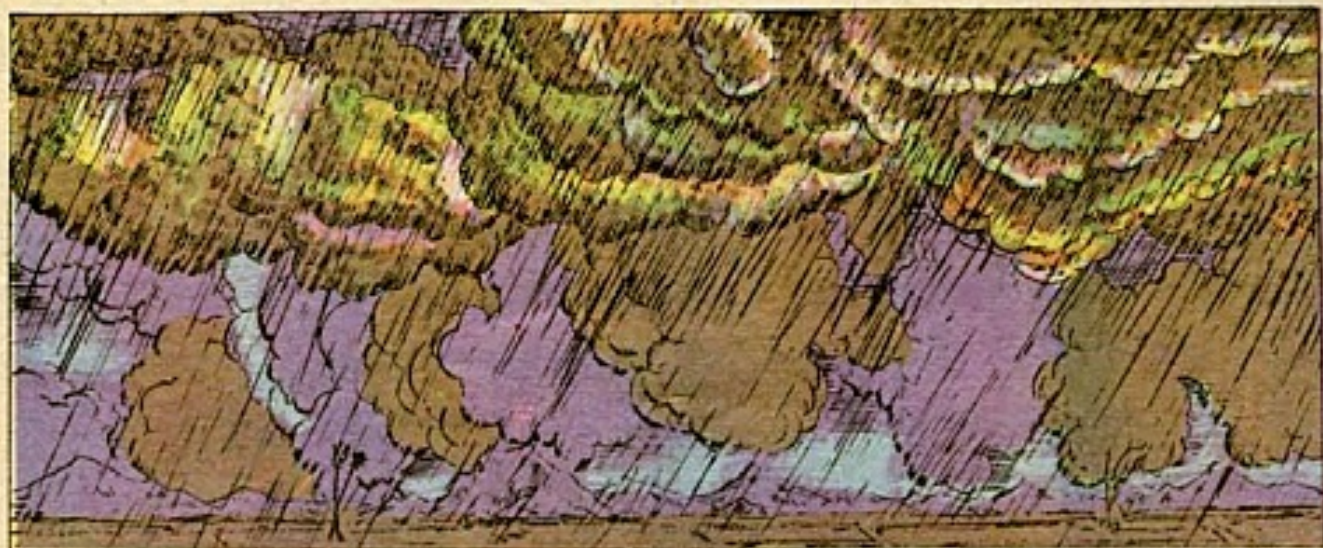
हमारे देश के आश्चर्य

# चित्तौड़ गढ़

राजस्थान में पाँच सौ फुट ऊँचे एक पहाड़ पर सात सौ एकड़ क्षेत्रफल में फैला चित्तौड़ गढ़ अत्यन्त ऐतिहासिक महत्व का प्रसिद्ध स्थान है। कहा जाता है कि अनेक राजवंशों ने यहाँ निवास किया और इस दुर्ग में पुराण पुरुष भीमसेन भी कुछ काल के लिए रहे थे।

ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि चित्रांगद नाम के एक मौर्य राजा ने यहाँ सर्वप्रथम अपनी राजधानी बनायी थी। इस पर्वत को उन्होंने चित्रकुट नाम दिया रा। वही कालक्रम में चित्तौड़ बन गया। परन्तु चित्रांगद के द्वारा निर्मित दुर्ग अब कालगर्भ में विलीन होगया है।
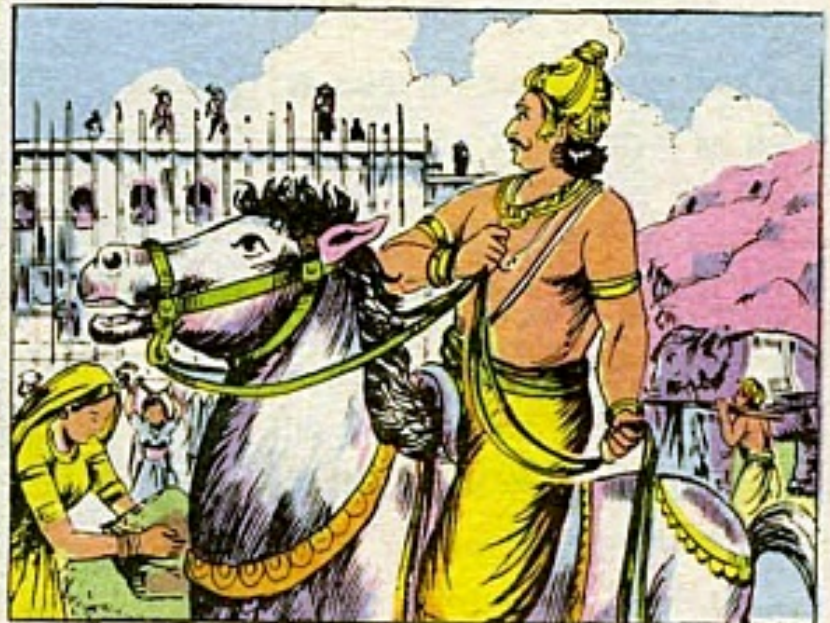
आठवीं शताब्दी में इस प्रदेश को मेवाड़ के शासक रावल वंशियों ने अपनी राजधानी बनाया। तेरहवीं शताब्दी में राणा रतनसिंह ने मेवाड़ पर शासन किया था। उनकी पत्नी पद्मिनी का सौन्दर्य विश्व-विख्यात हुआ और महाकाव्यों का विष्य बना। रानी पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़-दुर्ग पर घेरा डाल दिया।

अलाउद्दीन खिलजी चित्तौड़गढ़ पर अधिकार नहीं कर सका । उसने राजा रतनसिंह के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि वह रानी पद्मिनी को दर्पण में दिखादे । राजा रतनसिंह ने सुलतान का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । राजा रतनसिंह सुलतान को विदाई देने के लिए पहाड़ से उतर आये । सुलतान के सैनिक शिलाओं तथा झुरमुटों के पीछे छिपे बैठे थे । धावा बोलकर उन्होंने राजा रतनासिंह को बन्दी बना लिया।

इसके बाद सुलतान ने रानी पद्मिनी के पास यह सन्देशा भेजा कि रानी उसके पास चली आये, वरना वह रतनासिंह को मौत के घाट उतार देगा । रानी पद्मिनी ने उत्तर में यह संवाद भेजा कि वह अपनी सात सौ सखियों के साथ सुलतान के पास आ रही है । खिलजी प्रसन्न होकर रानी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा । उधर चित्तौड़ के क़िले से पालकियाँ चल पड़ीं ।

डेरे के समीप पहुँचते ही चौदह सौ राजपूत तलवार खींचकर पालकियों से नीचे कूद पड़े । कहार भी सैनिक ही थे । भयंकर युद्ध छिड़ गया । खिलजी के हज़ारों सैनिक मारे गये । राजा रतनसिंह बन्धनमुक्त हुआ । खिलजी अपने प्राण बचाकर भाग गया ।

खिलजी दिल्ली तो पहुँच गया, पर उसके हृदय में अपमान की आग सुलगती रही। उसने एक वर्ष पश्चात् भारी सेना लेकर चित्तौड़ गढ़ घेर लिया। राजपूत सैनिकों ने असाधारण शौर्य का परिचय देकर वीरगति प्राप्त की। रानी पद्मिनी ने अपनी सखियों के साथ जौहर का निश्चय किया। राजपूतनियाँ चिताओं कूदकर स्वाहा होगयीं। शत्रु को क़िले में मिली सिर्फ़ राख़।

मीराबाई की कथा तो प्रसिद्ध है ही। कृष्ण-भक्त मीराबाई ने चित्तौड़ के राजकुमार भोजराज के साथ विवाह किया था। उन्होंने मीराबाई के लिए एक सुन्दर कृष्ण मन्दिर बनवाकर दिया था। कृष्ण की प्रतिमा के सामने बैठकर मीराबाई भक्ति के पद गाती थीं और कृष्ण-प्रेम में लय हो जाती थीं।

चित्तौड़ के साथ एक अन्य प्रसंग पन्ना धाय के साथ जुड़ा है। एक बार शत्रु-प्रेरित एक हत्यारे ने नन्हे युवराज का वध करने के लिए इस दुर्ग में प्रवेश किया। पन्ना धाय ने अपने पुत्र को युवराज कहकर उसकी बलि दे दी और सच्चे युवराज को लेकर किसी गुप्त प्रदेश में चली गयी।
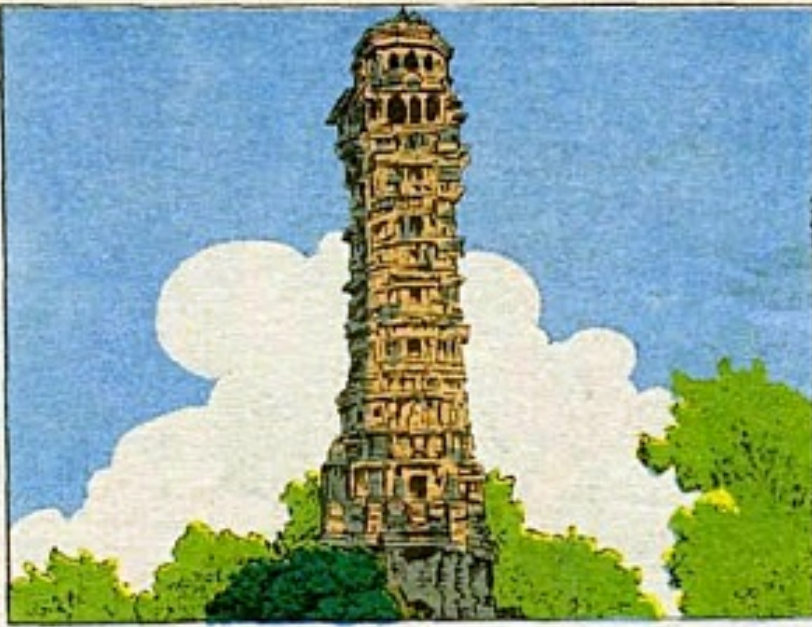
इस समय चित्तौड़ का क़िला शिथिलावस्था में है, फिर भी इसकी स्थापत्य कला देखते ही बनती है। यहाँ के कलाशिल्प अत्यन्त सुन्दर हैं। इनमें अत्यन्त विशिष्ट एक रचना है १४४८ में महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित कीर्तिस्तम्भ अथवा विजय-स्तम्भ। गुजरात के सुलतान कुतुबुद्दीन शाह पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में एक स्मारक के रूप में इस स्तम्भ का निर्माण हुआ था।

महाराणा कुम्भा का अत्यन्त विशाल महल एक अद्‌भुत रचना है। अत्यन्त सावधानी से निर्मित इस भवन में दुर्ग के भीतर से सुदूर प्रांतों को ले जानेवाले अनेक भूगर्भ-मार्ग हैं। इस महल के भूगर्भ मंडप में ही रानी पद्मिनी ने अपने प्राणों की आहुति दी थी।
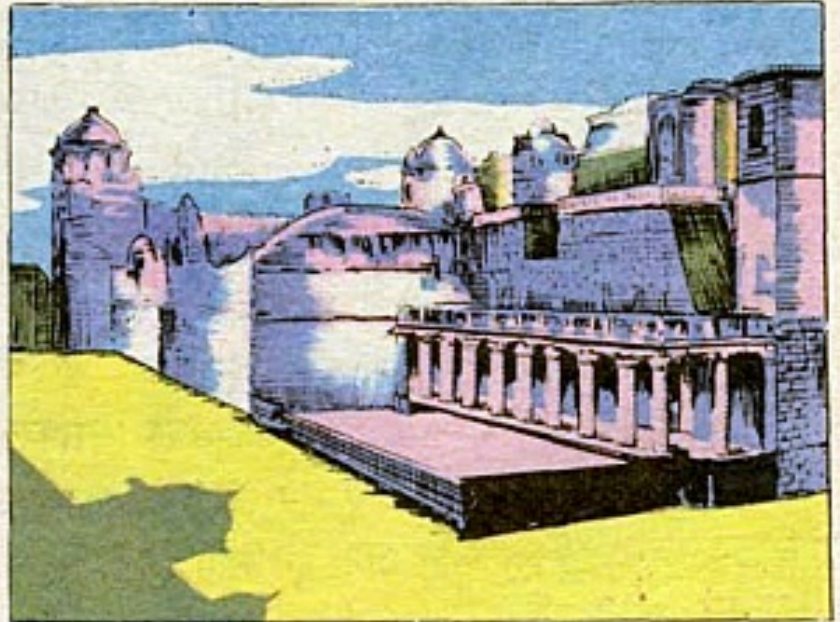
चित्तौड़ गढ़ के प्राचीन मन्दिरों में सबसे मुख्य मंदिर काली माता का है। कालीमाता इस स्थल की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। कुछ लोगों का यह विचार है कि प्रारंभ में यह मन्दिर सूर्य-मन्दिर रहा होगा।

# मिट्टी में सोना

एक किसान के एक पुत्र था। नाम था शमसुल। बचपन में ही शमसुल अपनी माँ की स्नेह-छाया से वंचित हो गया था। कुछ समय बाद उसका किसान पिता बीमार पड़ा। जब उसका अंतिम समय निकट आया, तब उसने अपने बेटे शमसुल को बुलाकर कहा, "बेटा, मैं निर्धन किसान हूँ। तुम्हारे लिए किसी प्रकार की ज़मीन-ज़ायदद नहीं जुटा पाया हूँ। पर मैं तुम्हें दिल से आशीर्वाद देता हूँ कि अगर तुम मिट्टी भी छुओगे तो वह सोना बन जायेगी।"

अपने पिता की मृत्यु के बाद शमसुल ने भक्तिपूर्वक अपने माता-पिता का स्मरण किया और कड़ी मेहनत में लग गया। उसका परिश्रम सफल हुआ और वह एक अंगूर के बगीचे का मालिक बन गया। आसपास जितने भी अंगूर बगान थे, उन सबसे बेहतर फ़सल उसकी होती, इसीलिए आमदनी भी उसी की सबसे अधिक थी

कुछ समय बाद उसने फलों के बाग़ ख़रीदे। मछलियाँ पकड़ने के लिए नावें ख़रीदीं। तेल के कोल्हू भी चलाने लगा। तेल और मछलियों से शमसुल को भरपूर फ़ायदा होने लगा। वह शीघ्र ही नगर के रईसों में गिना जाने लगा। शमसुल जो भी काम या व्यापार करता, उसमें उसे सफलता मिलती। वह धन-वैभव के बीच राजमहल जैसे एक सुन्दर और विशाल भवन में निवास करने लगा। अन्त में उसने एक संपन्न परिवार की सुन्दर कन्या के साथ विवाह कर लिया और सुखपूर्वक रहने लगा।

एक दिन की बात है, शमसुल अपनी धन-सम्पदा को लेकर शंका से भर उठा। उसने अपने एक घनिष्ठ मित्र आलम से अपने मन की बात बतायी और कहा, "दोस्त, मेरे पास जो कुछ है, उसमें मेरी शक्ति और मेहनत कम, मेरा सौभाग्य अधिक है। जब मैं इस विषय में सोचता

ग्रीक लोक-कथा

हूँ तो मुझे डर लगता है । जो लक्ष्मी इतनी आसानी से प्राप्त होती है, वह जा भी सकती है । तुम तो जानते ही हो कि भाग्य की यह देवी चंचला मानी जाती है, हो सकता है मैं किसी दिन महान देवी के कोप का भाजन बन जाऊँ । उसे सन्तुष्ट करने के लिए मैं कोई ऐसा काम करना चाहता हूँ, जिससे मुझे व्यापार में कुछ नुकसान हो जाये । तुम सोच-समझकर कोई ऐसा उपाय बताओ, जिससे सचमुच ही मुझे हानि हो!"

आलम ने कुछ देर सोचकर कहा, "मेरे दोस्त, मुझे बताओ, सबसे अधिक खजूर कहाँ पर होते हैं?"

"कैरो में।" शमसुल ने तुरन्त जवाब दिया। "तो फिर सोचना क्या है? एक काम करो! तुम्हें यहाँ जितना भी खजूर प्राप्त हो सकता है, उसे अधिक मूल्य पर ख़रीद लो! फिर उस खजूर को ऊँटों पर लादकर कैरो लेजाओ और कम से कम दाम की होड़ लगाकर बेच डालो । इस प्रकार निश्चय ही तुम्हें नुक़सान होगा ।" दोस्त आलम ने कहा ।

आलम की सलाह शमसुल को बड़ी अच्छी लगी । उसने इस सलाह को अमल में लाने का निश्चय कर लिया। उसने दूसरे ही दिन नगर के व्यापारियों से सारा का सारा खजूर अधिक से अधिक मूल्य देकर ख़रीद लिया। फिर उसने कुछ ऊँटों को किराये पर लिया और खजूर के बोरों को ऊँटों पर लदवाकर कैरो के लिए रवाना हो गया।

कई दिन तक रेगिस्तान में यात्रा करने के बाद वह पिरामिड़ों के प्रदेश में पहुँचा। पिरामिड़ों को देखकर शमसुल आश्चर्यचकित रह गया और खुद भी बुत की तरह खड़ा हो उन्हें देखने लगा। उसी समय सफ़ेद घोड़े पर सवार मिस्र देश का सुलतान उधर आ निकला। उसके साथ उसका परिवार तथा अनेक सैनिक भी थे। सभी सैनिकों के हाथों में छानने की चलनियां थीं ।

शमसुल ने सुलतान को सलाम करके पूछा, "हुज़ूर, क्या बात है? ये सभी सैनिक अपने हाथों में चलनियाँ लिये हुए हैं!"

सुलतान ने कहा, "नौजवान, क्या बताऊँ? आज सुबह मैं इधर घोड़े पर टहलने निकला था। मेरी शादी के समय की अंगूठी मेरी उँगली से फिसलकर कहीं गिर गयी । वह अंगूठी मुझे

प्राणों से भी अधिक प्यारी है। इसीलिए मैं इस प्रदेश की रेत को चलनियों से छनवा रहा हूँ कि वह अंगूठी मुझे मिल जाये।"

सुलतान ने फिर शमसुल से पूछा, "तुम किस काम से कैरो जा रहे हो?"

"मैं कैरो खजूर बेचने के लिए जा रहा हूँ।" ऊँटों पर लदे खजूर के बोरों की ओर इशारा करके शमसुल ने कहा।

सुलतान ने चकित होकर पूछा, "तुम कैरो जाकर खजूर बेचोगे? पास के खजूर के पेड़ों की ओर तो देखो! खजूर पेड़ों पर कैसे लदे हुए हैं? एक पेड़ के खजूर एक दिन में तोड़े नहीं जा सकते। तुम अपना माल कैरो ले जाओगे तो एक बोरा एक कौड़ी में भी नहीं बिकेगा। तुम्हारा बहुत बड़ा नुक़सान होगा।"

सुलतान की बात सुनकर उसके साथ आये परिवार के लोग खिलखिलाकर हँस पड़े।

शमसुल ने नुक़सान उठाने का अपना दृढ़ निश्चय सुनाकर कहा, "हुज़ूर, आप तो मुझे डर दिखा रहे हैं। मुझे डर इस बात का है कि मुझे नुक़सान नहीं होगा। मेरे पिताजी ने मरते वक़्त मुझे आशीर्वाद दिया था, 'बेटा, तुम मिट्टी का स्पर्श भी करोगे तो वह सोना बन जायेगी'।" यह कहकर शमसुल ने झुककर मुट्ठी भर बालू उठायी।

इसके बाद उसने मुट्ठी खोली तो हथेली की सारी रेत रिस कर गिर पड़ी। उसकी हथेली में सोने की अंगूठी चमक रही थी।

"अरे, यही तो मेरी अंगूठी है जो आज सुबह गिर गयी थी।" सुलतान विस्मित होकर चिल्ला उठा।

सुलतान ने शमसुल के भाग्य की सराहना की। अपनी खोयी हुई अंगूठी को इतनी सरलता के साथ प्राप्त करने के उपलक्ष्य में उसे अमूल्य उपहार दिये और उसे वापस भेज दिया।

इस प्रकार भाग्यशाली शमसुल नुक़सान उठाने के लिए जाकर भी और अधिक फ़ायदा उठाकर अपने घर लौटा।

# कंजूसी का खेल

श्यामपुर में गोविन्द नाम का एक कंजूस रहता था। उसके पास काफ़ी पैसा था, पर वह उसे किसी भी तरह खर्च नहीं करना चाहता था। गोविन्द अपने बेटे गोपीनाथ को भी कंजूसी की शिक्षा देने लगा। यह सब देख श्यामपुर के लोगों को बड़ा आश्चर्य होता। पर वे क्या कर सकते थे?

एक बार एक त्यौहार पर गोविन्द ने सोचा कि गोपीनाथ केलिए नये कपड़े सिलवा जायें। पर वह दर्जी के पैसे बचाना चाहता था। उसने दर्जी धर्मदास की मज़दूरी काटने की एक योजना बनायी। उसने अपने बेटे गोपीनाथ को अच्छी तरह पट्टी पढा दी कि दर्जी के साथ उसे कैसा व्यवहार करना है!

त्यौहार का दिन आया। गोविन्द ने देखा कि गोपीनाथ पुराने कपड़े पहने ही घूम रहा है। उसने विस्मित होकर अपने बेटे से पूछा, "बेटा गोपी, क्या तुम नये कपड़े सिलवाकर नहीं लाये?"

"पिताजी, धर्मदास दर्जी ने अपनी मज़दूरी लिये बिना कपड़े देने से इनकार कर दिया है।" गोपीनाथ ने जवाब दिया।

"क्या तुमने दर्जी से यह नहीं बताया कि तुम अभी छोटे लड़के हो? अगर मैं सिलाई के पैसे तुम्हारे हाथ भेजूँगा, तो उनके रास्ते में गिर जाने का डर है?" गोविन्द ने क्रुद्ध होकर पूछा।

"पिताजी, मैंने यही बात दर्जी को बतायी थी। दर्जी ने जवाब में कहा, 'जब तक तुम रास्ते में पैसा न गिराने लायक़ बनते हो, तुम्हारे उस आयु में पहुँचने तक मैं रुक सकता हूँ। तुम तभी मज़दूरी देकर कपड़े ले जाना'।" गोपीनाथ ने कहा।

गोविन्द को समझते देर न लगी कि दर्जी धर्मदास उसके कंजूसी के खेल को समझ गया है और उसे सबक़ सिखाना चाहता है। उसने गोपीनाथ को सिलाई के पैसे देकर उसे कपड़े लाने के लिए कहा।

# उत्तर रामायण

रावण ने वरुण-लोक से लंका की ओर प्रस्थान किया। वह पुष्पक विमान से जा रहा था। रावण में अहंकार कूट-कूटकर भरा था। लोक-मर्यादा या लोक-आचरण की उसे कोई चिन्ता नहीं थी। वरदानों के कारण वह और भी निर्भय एवं निरंकुश होगया था। मार्ग में उसे जो भी सुन्दर स्त्री दिखाई देती, वह उसे पकड़कर पुष्पक विमान में बिठा लेता। इस प्रकार उसने हज़ारों स्त्रियों को अपने अधिकार में कर लिया। उनमें कन्याएँ भी थीं और विवाहिता स्त्रियाँ भी। वे सब दहाडें मारकर रोने लगीं और रावण को शाप देने लगीं।

रावण ने जैसे ही लंका में प्रवेश किया, उसकी बहन शूर्पणखा विलाप करती हुई सामने आयी और बोली, "तुमने यह क्या किया, भैया? तुमने अन्य कालकेयों के साथ मेरे पति का संहार भी कर दिया? मैं विधवा होगयी। बहनोई का वध करने के लिए तुम्हारे हाथ कैसे उठे? कभी किसी ने ऐसा किया है?"

शूर्पणखा का रुदन सुनकर रावण ने उसे समझाया, "बहन, जो होना था, सो हो गया। अब रोने-धोने से फ़ायदा ही क्या है? जब मैं युद्ध में उन्मत्त हो जाता हूँ, तब मुझे अपने-पराये का ज्ञान नहीं रहता। तुम अब से खर के साथ रहो! वह तुम्हारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहेगा। मैं उसे चौदह हज़ार राक्षसों का अधिपति बनाकर दण्डकारण्य भेज रहा हूँ। दण्डकारण्य की रक्षा के लिए दूषण भी उसके साथ रहेगा। ये सब तुम्हारे आज्ञाकारी रहकर तुम्हारे आदेशों का पालन करेंगे। मैं सारी व्यवस्था कर दूँगा।"

रावण की व्यवस्था के अनुसार शूर्पणखा खर, दूषण के साथ दण्डकारण्य में जाकर रहने लगी। उसका जीवन सुखपूर्वक बीतने लगा।

रावण अब निकुंभिल वन में पहुँचा। वहाँ अपने पुत्र मेघनाद को यज्ञ करते हुए देखकर वह परम आनन्दित हुआ। उसने उसे आलिंगन करके पूछा, "बेटा, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

इस प्रश्न का उत्तर शुक्राचार्य ने दिया। वे बोले, "रावण, तुम्हारे पुत्र ने सात यज्ञ करने का संकल्प किया है। अग्निष्टोम, अश्वमेध, राजसूय, गोमेध, वैष्णव इत्यादि यज्ञों के अलावा अत्यन्त दुर्लभ महेश्वर यज्ञ करके इसने शिव का साक्षात्कार किया और उनसे इच्छागामी रथ, सर्वत्र अन्धकार फैलानेवाली माया, शक्तिशाली धनुष और बाण बरदान के रूप में प्राप्त किये। इस समय मेघनाद सातवाँ और अंतिम यज्ञ कर रहा है।"

शुक्राचार्य की बातों से रावण तनिक भी सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह बोला, "शुक्राचार्य, तुमने मेघनाद के लिए यज्ञादि कार्यों की व्यवस्था करके अच्छा काम नहीं किया। इंद्र आदि हमारे शत्रु हैं। उन देवताओं को सन्तुष्ट और प्रसन्न करने के लिए तुमने हमारा बहुत धन नष्ट किया है। अभी तक जितना पुण्य तुम कमा चके हो, वह पर्याप्त है।" कहकर रावण मेघनाद को अपने साथ ले गया।

उसी समय विभीषण ने रावण को एक दुखद सूचना दी। कुंभीनस नाम की एक कन्या रावण के घर में पल कर बड़ी हुई थी। वह रावण की माता के चाचा माल्यवन्त की दौहित्री थी और इस तरह रिश्ते में उसकी बहन लगती थी। मधु नाम के एक राक्षस ने इस कन्या को रावण के महल में अकेली देखा और अपहरण कर लिया। उस समय रावण दिग्विजय के लिए निकला हुआ था। कुंभकर्ण गहरी नींद सो रहा था। विभीषण जलमग्न होकर तपस्या कर रहा था।

रावण ने इस बीच अनेक कन्याओं का अपहरण किया था, पर वह अपनी बहन के अपहरण का समाचार सुनकर क्रोध से भर उठा। उसका अहंकार जाग उठा। सारा विवेक नष्ट हो गया। उसने एक क्षण को भी विश्राम नहीं लिया और तुरन्त मधु के संहार के लिए उन्मत्त हो उठा। उसने कुंभकर्ण को नींद से उठा दिया और

राक्षस वीरों तथा सैनिकों को युद्ध के लिए सन्नद्ध करके मधु की नगरी मधुपुर पर आक्रमण करने के लिए निकल पड़ा। कुंभीनस तब तक मधुकी पत्नी बन चुकी थी। जब उसने यह समाचार सुना कि रावण भारी सेना लेकर मधु पर हमला करने के लिए आ रहा है तो वह भयभीत होगयी और रोती हुई रावण से बोली, "भैया, अपने बहनोई का संहार करके मुझे विधवा न बनाओ!"

रावण का हृदय पसीज गया। वह कुंभीनस से बोला, "बहन, मैं तुम्हारे पति का वध तो नहीं करूँगा। पर बोलो, वह इस समय कहाँ है? मैं देवताओं पर विजय प्राप्त करने के लिए स्वर्ग पर आक्रमण करने जा रहा हूँ। मैं तुम्हारे पति मधु को अपने साथ ले जाना चाहता हूँ ताकि वह युद्ध में मेरी सहायता कर सके और देवताओं पर मेरी विजय के यश में भागीदार हो सके।"

कुंभीनस निश्चिंत हो गयी। वह प्रसन्न मन से अपने पति मधु के पास जाकर बोली, "मेरे भाई देवताओं के साथ युद्ध करने के लिए जारहे हैं। वे तुम्हें अपने साथ ले जाना चाहते हैं। तुम उनके साथ प्रस्थान करो! ऐसे लोगों का स्नेह सदा हितकर होता है।"

मधु स्वागत-सामग्री लेकर रावण के पास पहुँचा और उसका बहुविध सत्कार किया।

रावण ने एक दिन के लिए अपने बहनोई का आतिथ्य स्वीकार किया और दूसरे दिन अपनी यात्रा आरंभ की। जब वह वैश्रवण के निवास-स्थान कैलास में पहुँचा, तब शाम हो

चुकी थी। रावण की सेना ने वहीं पर डेरा डाल दिया।

वह चाँदनी रात थी। चारों तरफ़ चंद्रमा की शुभ्र ज्योत्स्ना छिटक रही थी। शीतल मलय पवन धीरे-धीरे बह रहा था। वृक्षों के बीच किन्नर गाते हुए विचरण कर रहे थे। कुबेर के भवन से अप्सराओं का मधुर संगीत सुनाई दे रहा था। चारों तरफ़ फूलों की सुगंध व्याप्त थी। पर्वत पर बैठा रावण चतुर्दिक दृश्यों का अवलोकन कर रहा था।

रंभा उस समय अप्सराओं की शिरोमणि थी। वह रावण की निद्रा-निमग्न सेना के बीच से उधर आ निकली। उसने दिव्य आभूषण और पुष्पहार धारण कर रखे थे, जूड़े में मन्दार पुष्प खोंस रखा

था और वह नील वर्ण की ओढ़नी ओढ़े हुए थी। रंभा दूसरी लक्ष्मी की तरह लग रही थी। रावण उसे देखकर मोहित होगया। जन्म से ही असंयमी तो वह था ही, साथ ही, हर श्रेष्ठ और सुन्दर वस्तु पर वह अपना अधिकार समझता था। रावण रंभा के पास गया और उसका हाथ पकड़कर बोला, "सुन्दरी, इस समय तुम कहाँ, किसके पास जा रही हो? वह भाग्यवान व्यक्ति कौन है? मैं किसी भी दृष्टि से उससे कम नहीं हूँ। तीनों लोकों में मेरी समता करनेवाला कोई प्राणी नहीं है। मैं हाथ जोड़कर तुमसे प्रार्थना करता हूँ। तुम मुझे स्वीकार करो!"

रंभा रावण का प्रेम-निवेदन सुनकर काँप उठी। वह उसके बल से परिचित थी, इसलिए नम्र होकर बोली, "राक्षसराज, आपके मुँह से ये बातें शोभा नहीं देतीं। रक्षा आपका धर्म है। अगर कोई और मुझे पीड़ित करता तो आपका धर्म था कि आप मेरी रक्षा करते। मैं आपके भतीजे नलकूबर की पत्नी हूँ और आपकी बहू लगती हूँ। आपके भतीजे नलकूबर मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। मैं उन्हीं के पास जा रही हूँ। आप मेरा मार्ग छोड़ दें।"

रावण पर रंभा की बात का कोई असर नहीं हुआ और उसने उसके साथ लज्जाजनक व्यवहार किया।

अपमानित होकर रंभा नलकूबर के पास पहुँची। वह दुख एवं लज्जा से काँप रही थी। उसने नलकूबर के पैर पकड़ लिये और रावण द्वारा अपने अपमान की कथा को अपने पति को सुना दिया।

नलकूबर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा। उसने जल का स्पर्श करके रावण को शाप दिया, "अगर रावण ने भविष्य में किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा एवं स्वीकृति के बिना बलात्कार किया तो उसी समय उसके सिर के एक हज़ार टुकड़े हो जायेंगे।"

नलकुबेर के शाप का समाचार जब रावण के द्वारा अपहरण की गयी स्त्रियों के कानों में पड़ा तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुईं और ऐसे किसी दिन की प्रतीक्षा करने लगीं जब सचमुच ही रावण के सिर के एक हज़ार टुकड़े हो जायें। रावण ने उस दिन से स्त्रियों का इस तरह अपमान करना बन्द कर दिया।

इसके बाद रावण ने अपनी सेनाओं के साथ स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया। स्वर्ग के चारों तरफ राक्षस सेनाएँ घिर आयीं। इंद्र ने विष्णु के पास जाकर कहा, "प्रभु, रावण ने अपने राक्षस सैन्य के साथ स्वर्ग पर आक्रमण कर दिया है। मुझे क्या करना चाहिए ? इसके पूर्व मैंने आपकी सहायता से अनेक राक्षसों को सरलता से जीत लिया था। क्या इस समय भी आप सुदर्शन चक्र धारण कर रावण के साथ युद्ध करके मेरी रक्षा करेंगे ?"

"इंद्र, मैं इस समय रावण के साथ युद्ध नहीं करूँगा। वह मेरे हाथों से मरेगा भी नहीं। उसकी मृत्यु का समय अभी निकट नहीं आया है। इस समय तुम्हीं उसका सामना करो! तुम्हें भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है।" विष्णु ने कहा ।

इसके बाद देवताओं एवं राक्षसों के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया। रावण की सेना का नेतृत्व उसके दादा सुमाली ने किया। उसने वसु के साथ युद्ध किया और वीरगति प्राप्त की। राक्षस सेना की अपार क्षति हुई। इस युद्ध में नब्बे प्रतिशत राक्षस काम आये। इंद्र ने अपार पराक्रम प्रदर्शित किया और रावण को जीवित बन्दी बना लिया। पिता को बन्दी जानकर मेघनाद ने अपनी माया का प्रयोग किया और अदृश्य रूप में युद्ध करते हुए इंद्र को बन्दी बना लिया। उसने अपने पिता को बन्धनमुक्त करके घोषणा की, "पिताजी, युद्ध समाप्त होगया है। हम विजयी हुए हैं। देखिये, इंद्र हमारे हाथों में बन्दी है। अब आप निश्चिंत होकर स्वेच्छापूर्वक तीनों लोकों पर शासन करें!"

इंद्र को जीतकर मेघनाद इंद्रजित बन गया। रावण अपने पुत्र एवं बन्दी इंद्र को साथ लेकर लंका लौट आया। यह सब समाचार सुनकर देवताओं ने ब्रह्मा को साथ लिया और इंद्र को छुड़ाने के लिए लंका गये। ब्रह्मा ने रावण की सभा में प्रवेश करके कहा, "रावण, तुम्हारे पुत्र मेघनाद का प्राक्रम प्रशंसनीय है। इसे देखकर मै अत्यन्त प्रसन्न हूँ। आज से तुम्हारा पुत्र इंद्रजित कहलायेगा। उसे कोई पराजित नहीं कर सकेगा। उसकी मदद से तुमने देवताओं को पराजित किया है। अब बात समाप्त होगयी है। तुम इंद्र को

छोड़ दो!"

"पितामह, अगर आप इंद्र की मुक्ति चाहते हैं तो मुझे अमरता प्रदान कीजिये!" इंद्रजित ने बीच में ही कहा ।

"पुत्र, किसी भी प्राणी के लिए पूर्ण अमरत्व नहीं होता । यह विधि का विधान है । इसलिए इस विधान को कोई बदल नहीं सकता । तुम कोई दूसरा वर मांग लो । मैं अवश्य दूँगा ।" ब्रह्मा ने कहा ।

"यदि ऐसा है तो मैं भी पूर्ण अमरत्व नहीं चाहता । मैं आपको संतुष्ट करने के लिए प्रतिदिन अग्नि में मंत्रों एवं हविष द्वारा यज्ञ किया करूँगा । मैं यह चाहता हूँ कि युद्ध-प्रस्थान की वेला में यज्ञ करते समय अग्नि मुझे घोड़ों से जुता हुआ रथ प्रदान करे और जब तक मैं उस रथ पर आरूढ़ रहूँ, अमरत्व प्राप्त रहूँ । यही वर मैं आपसे चाहता हूँ । यदि उस यज्ञ के पूर्ण होने से पूर्व मेरी मृत्यु हो जाये तो कोई बात नहीं । इस प्रकार मैं आंशिक अमरत्व की कामना करता हूँ ।" इंद्रजित ने ब्रह्मा से आग्रह किया ।

ब्रह्मा ने स्वीकृति दी । रावण ने इंद्र को मुक्त कर दिया । इसके बाद समस्त देवता इंद्र के साथ प्रसन्नतापूर्वक स्वर्ग लौट गये ।

युद्ध के मद में रावण जब पृथ्वी पर संचरण करता फिर रहा था, उस समय उसे कुछ पराजयों का सामना करना पड़ा । अगस्त्य मुनि ने इन पराजयों का सविस्तार वर्णन श्री रामचंद्र के सम्मुख किया ।

इंद्र को छोड़ने के बाद रावण ने सहस्त्र हाथोंवाले कार्तवीर्यार्जुन को जीतने का विचार किया । वह अपने इस संकल्प को पूरा करने की इच्छा से अपने परिकर के साथ माहिष्मती नगर में पहुँचा । वहाँ उसे समाचार मिला कि कार्तवीर्यार्जून अपनी राजधानी में नहीं है, बलिक अपनी रानियों के साथ नर्मदा नदी में स्नान करने के लिए गया हुआ है ।

रावण भी सपरिकर नर्मदा नदी के किनारे पहुँचा । उसने नदी में स्नान किया और शिव-पूजन के लिए तट पर आसीन हुआ । उसके मंत्रियों ने पूजन-सामग्री एकत्रित की और नदी के तट पर जमा कर दी । रावण सदा अपने साथ एक सोने का शिवलिंग रखा करता था । उसने उसे

बालू के एक टीले पर प्रस्थापित किया और उसकी अर्चना करके उसके समक्ष गाते हुए नृत्य करने लगा ।

नर्मदा नदी पूर्वी दिशा से पश्चिम की ओर बहती है और पश्चिमी सागर में गिर जाती है। अचानक यह नदी पश्चिम से पूरब की ओर बहने लगी। इसके अलावा उस नदी में उफान आ गया और वह नदी रावण के पूजा-पुष्प बहा ले गयी। यह देख रावण ने चुटकी बजायी। उसी समय उसके सामने शुक, सारण उपस्थित हुए। रावण ने उन्हें इस बात का पता लगाने का आदेश दिया कि नर्मदा नदी की धारा उलटी क्यों बहने लगी?

शुक, सारण गये। उन्होंने देखा, कार्तवीर्यार्जुन अपनी पत्नियों के साथ जलक्रीड़ा कर रहा है। उसने अपने सहस्त्र हाथों से नदी की धारा को रोका था और फिर छोड़ दिया था, जिससे नदी उल्टी होकर बहने लगी थी। शुक-सारण ने लौटकर यह समाचार रावण को दिया। उन्होंने बताया कि महावृक्ष की तरह विशाल एक मानव ने नदी की धारा को बदला है। इस वर्णन के आधार पर रावण को विश्वास होगया कि वह विशालकाय मानव निश्चय ही कार्तवीर्यार्जुन होना चाहिए। कार्तवीर्यार्जुन को पराजित कर रावण वह यश प्राप्त करना चाहता था जो आज तक किसी को प्राप्त नहीं हुआ था। वह कार्तवीर्यार्जुन से युद्ध करने के लिए निकल पड़ा। उसने कार्तवीर्य के मंत्रियों से कहा, "जाओ, अपने राजा से कह दो, लंकाधिपति रावण उसे युद्ध के लिए आमंत्रित कर रहा है।"

कार्तवीर्य के मंत्रियों ने रावण को नीति का उपदेश देकर कहा, "राक्षसराज, युद्ध के लिए आपने यह कैसा समय चुना है? जब कोई राजा अपनी रानियों के साथ जलक्रीड़ा में मग्न हो, क्या तब उसे युद्ध का आमंत्रण दिया जाता है? यह अनीति है! यदि आपको युद्ध करना है तो आप कल का समय निश्चित करें और यहाँ आकर अपनी शक्ति का परिचय दें।" पर रावण ने मंत्रियों की सलाह को स्वीकार नहीं किया और हठ की कि युद्ध इसी समय होना चाहिए। कार्तवीर्यार्जून के मंत्रियों ने कहा कि रावण पहले उनके साथ युद्ध करे, इसके बाद उनके राजा कार्तवीर्यार्जुन के साथ ।

दोनों दलों के बीच युद्ध छिड़ गया। रावण के राक्षस सैनिकों ने कार्तवीर्यार्जुन के परिवार के अनेक लोगों का वध कर डाला। कुछ को अपना ग्रास बनाया। इस युद्ध का कोलाहल सुनकर कार्तवीर्यार्जुन ने अपनी रानियों से कहा कि वे भयभीत न हों और एक गदा हाथ में लेकर उसे अपने पाँच सौ हाथों से घुमाता हुआ बड़ी तीव्र गति से युद्धभूमि के निकट पहुँचा। कार्तवीर्य को देखकर प्रहस्त मूसल से उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। प्रहस्त ने मूसल को कार्तवीर्यार्जुन की तरफ फेंका, लेकिन उसने उसे अपनी गदा से तोड़ दिया। गदा के प्रहार से प्रहस्त नीचे गिर गया। यह देख मारीच, शुक, सारण, धूम्राक्ष, महोदर आदि युद्धभूमि से भाग खड़े हुए।

इसके बाद रावण ने कार्तवीर्यार्जुन के साथ युद्ध आरंभ किया। दोनों पहाड़ों की तरह अविचल डटे रहे। अन्त में, कार्तवीर्य ने रावण के वक्ष पर अपनी गदा से तीव्र प्रहार किया। उसकी गदा टुकड़े-टुकड़े होगयी, पर रावण भी उन प्रहारों से आहत होकर नीचे गिर पड़ा। कार्तवीर्यार्जुन ने रावण को रस्सियों से बाँधा और उसे अपने नगर में ले गया।

रावण के बन्दी होने का समाचार जब स्वर्ग में वास कर रहे पुलस्त्य को मालूम हुआ, तब वह शीघ्र गति से माहिष्मती नगर में पहुँचा। कार्तवीर्यार्जुन ने बड़े आदर से उसका आतिथि-सत्कार किया और उसके आगमन का कारण पुछा।

पुलस्त्य ने कहा, "बेटा कार्तवीर्य, तीनों लोकों के विजेता और अपराजेय कहलानेवाले मेरे पौत्र रावण को तुमने पराजित किया। मैं किन शब्दों में तुम्हारे शौर्य और पराक्रम की प्रशंसा करूँ? तुम मेरे पौत्र को मुक्त कर दो!"

कार्तवीर्यार्जुन ने बिना किसी प्रतिवाद के रावण के बंधन खोल दिये। अग्नि को साक्षी बनाकर उसके साथ मैत्री स्थापित की और बहुमूल्य वस्त्र एवं आभूषणों की भेंट देकर उसे सादर विदा किया।

(क्रमश)

# चूड़ियाँ

करमचंद्र के दो पुत्र थे—रामचंद्र और कृष्ण चंद्र। करमचंद्र ने अपने इन दोनों बेटों को शहर में पूरी शीक्षा दिलवायी थी। जब रामचंद्र और कृष्णचंद्र पढ़ाई पूरी करके गाँव में वापस लौटे, तब बड़े रामचंद्र की आयु थी चौबीस वर्ष और कृष्णचंद्र की आयु थी तेईस वर्ष। लेकिन उन्होंने अपनी नौकरी के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया और वे यहाँ-वहाँ आवारागर्दी करने लगे। वे सुबह खाना खाकर घर से निकल पड़ते और किसी खंडहर पड़े मंदिर में जुआ खेलते। करमचंद्र के पास ज़मीन-जायदाद की कमी नहीं थी, इसलिए ये दोनों लड़के खाने-कमाने की जरा भी चिन्ता किये बिना अपना समय बरबाद करते।

करमचंद्र अपने बेटों की मटरगश्ती से तंग होगया। उस ने एक दिन दोनों को बुलाकर खूब डांटा। तब रामचंद्र ने अपने छोटे भाई से कहा, "अरे कृष्ण, नौकरी प्राप्त करना सरल काम नहीं। फिर हम नौकरी करें भी क्यों? हमें खाने-पीने की तो कोई कमी है नहीं। अच्छा देखो, पिताजी को संतुष्ट करने के लिए मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ।"

"बताओ !" कृष्णचंद्र बोला।

"हम हर रोज़ घर से यह बताकर निकल पड़ा करेंगे कि हम शहर में नौकरी तलाश करने जा रहे हैं। गाँव के बाहर किसी अच्छी जगह पर शाम तक अपना समय काटेंगे। रात होने से पहले घर लौट आयेंगे। घर में खाना तो तैयार मिलेगा ही!" रामचंद्र ने अपनी योजना बतायी।

कृष्णचंद्र को अपने भाई का यह कार्यक्रम बहुत पसन्द आया। दूसरे दिन दोनों भाई खाना खाकर घर से निकल पड़े। गाँव के बाहर एक पगडंडी के पास उन्हें एक बहुत बड़ा पीपल का वृक्ष दिखाई दिया।

"वाह, यह तो बहुत बढ़िया जगह है। दुपहर

विनायक राव

के समय हम यहाँ मीठी झपकी भी ले सकते हैं।" कृष्णचंद्र ने कहा।

"सचमुच ही यह बहुत अच्छी जगह है। यहीं पर थोड़ी सफाई कर लेंगे। घने वृक्ष की छाया में घंटे क्षण की तरह बीत जायेंगे।"रामचद्र ने कृष्णचद्र का समर्थन किया।

इसके बाद दोनों भाइयों ने पेड़ के नीचे पड़े सूखे पत्तों को हटाना शुरू किया। कंकड़-पत्थरों को चुनकर दूर फेंक दिया।

जब ये दोनों सफाई में लगे थे, उस समय उस रास्ते से घर लौट रही एक तुलसी नाम की औरत ने इन्हें देखा। वह कुछ चकित होकर बोली, "अरे राम, अरे कृष्ण, तुम दोनों गाँव में हमेशा लकड़ों की तरह निश्चल पड़े रहते थे। आज गाँव के बाहर यहाँ किस काम में लगे हो ?"

तुलसी एक भले संपन्न परिवार की स्त्री थी। पर वह कुछ सनकी स्वभाव की थी।

"मौसी, हम अपने गाँव के तमाम लोगों की भलाई के लिए यहाँ मेहनत कर रहे हैं। हम यहाँ एक मन्दिर बनायेंगे।" रामचंद्र ने मज़ाक में कहा।

"राम और कृष्ण का मंदिर।" कृष्णचंद्र बोला।

'बेटो, तुम तो यह बड़ा अच्छा काम कर रहे हो। तुम उस मन्दिर के निर्माण के लिए चन्दे के रूप में ये चूड़ियाँ ले लो। पर याद रखना, काम जल्दी हो जाना चाहिए।" इतना कहकर तुलसी ने अपने हाथों की दो चूड़ियाँ निकालकर पीपल के तने के पास रख दीं और अपने घर की ओर चल पड़ी।

धूप में धक-धक चमकती उन चूड़ियों को देखकर रामचंद्र और कृष्णचंद्र की आँखें भी चमक उठीं।

"कृष्ण, मुझे तो लगता है कि बाज़ार में इन चूड़ियों का दाम चार हज़ार से कम न होगा। हम इन्हें शहर में ले जाकर बेच देंगे।" रामचंद्र ने कहा।

"हमें जल्दी करनी चाहिए। अगर उस बावरी तुलसी ने यह ख़बर हमारे घर में देदी तो बाबूजी दौड़कर आजायेंगे। पहले हम इन चूड़ियों को बेचकर पैसा अपने कब्ज़े में कर लें, फिर बाबूजी से कह देंगे कि हम उस बारे में कुछ नहीं जानते।" कृष्णचंद्र ने सुझाया।

दोनों भाई जब शहर पहुँचे, दोपहर हो चुकी थी। बाज़ार में वे एक जौहरी की दूकान से कुछ दूर ठहर गये।

रामचंद्र ने कृष्णचंद्र से कहा, "कृष्ण, हमें सोने का आज का भाव मालूम नहीं है। मैं दूकान के बाहर रहूँगा, तुम दूकान के अन्दर जाकर ऐसा अभिनय करना, मानो तुम चूड़ियाँ ख़रीदने आये हो। इस प्रकार तुम सोने के भाव का पता लगा लेना।"

रामचंद्र ने चूड़ियाँ अपनी कमर में खोंसी और जौहरी की दूकान के सामने एक चबूतरे पर बैठ गया।

जौहरी के नौकर-चाकर खाना खाने के लिए घर चले गये थे। इसलिए स्वयं मालिक ही कृष्णचंद्र को चूड़ियों के तरह-तरह के डिज़ाइन निकालकर दिखाने लगा। वह कृष्णचंद्र से बोला, "देखो भाई, तुम पहले अपने पसन्द की चूड़ियाँ चुन लो, कारीगरी के आधार पर ही मैं उनका दाम बता सकूँगा।"

कृष्णचंद्र जब चूड़ियाँ देख रहा था, तब क़ीमती पोशाक पहने हुए एक आदमी दूकान के अन्दर आया, बोला, "जौहरी साहब, हमें नये फैशन के हार दिखाइये! कोई भी दस हज़ार से कम न हो!"

जौहरी ने अनेक बहुमूल्य हार उस आगन्तुक के सामने रख दिये और प्रत्येक हार की विशेषता बताने लगा।

इसी बीच कृष्णचंद्र ने देखा कि दूकानदार के पास वैसी ही चूड़ियों का एक जोड़ा है, जैसा तुलसी ने उन्हें दिया था। उसने पूछा, "जौहरी
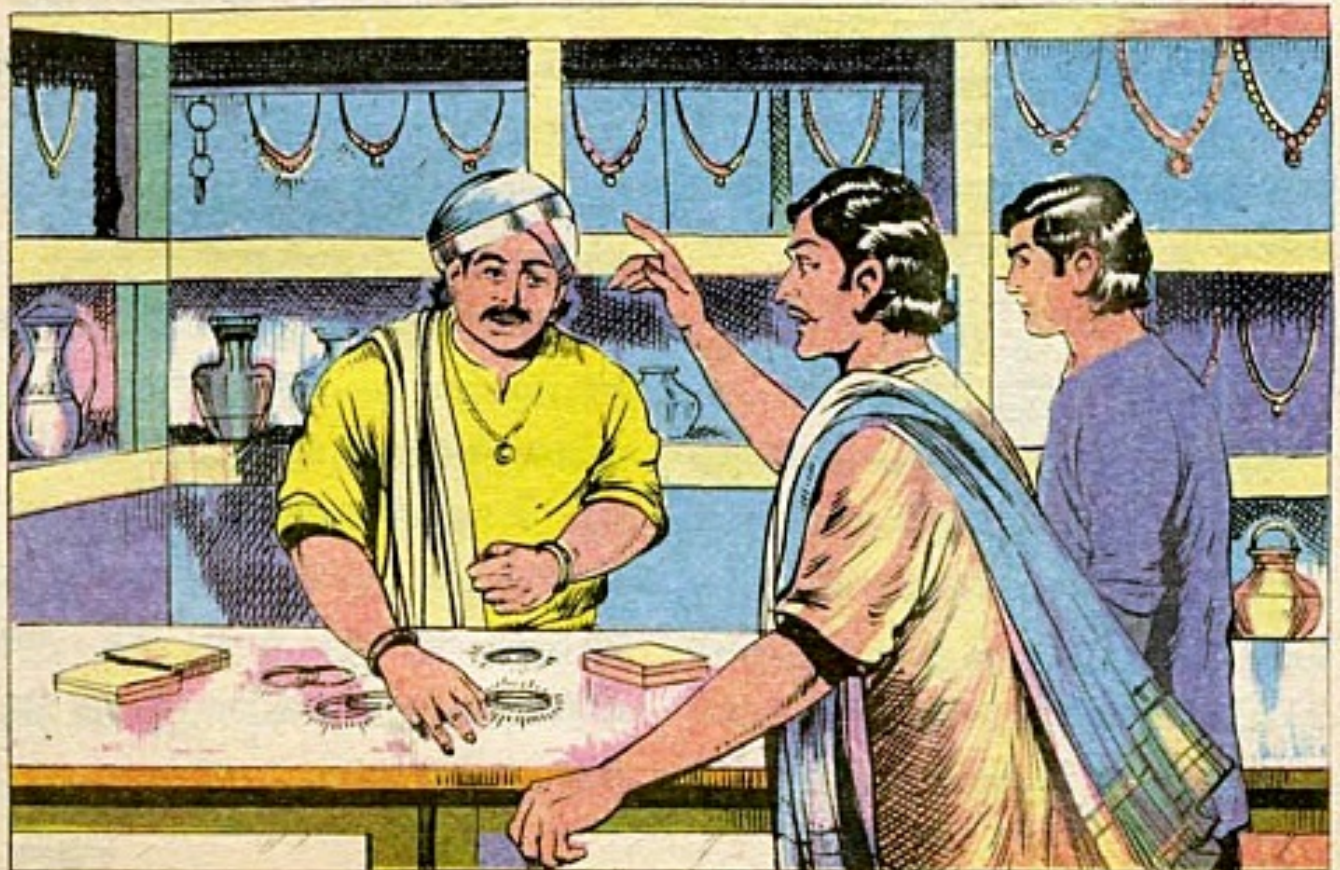
जी, इन चूड़ियों का क्या दाम होगा ?"

जौहरी ने उन चूड़ियोंको हाथ में उठा लिया और क्षण भर के लिए उनका मूल्य निर्धारण करने में लग गया कि तभी कीमती पोशाक वाला वह धनीमानी व्यक्ति क्रोध में आकर बोला, "मेरी ज़िन्दगी में यह पहला मौक़ा है कि दूकान में मेरी मौजूदगी के बावजूद दूकान का मालिक पहले दूसरे ग्राहकों को निपटा रहा है। मैं अब यहाँ एक क्षण के लिए भी नहीं ठहर सकता।" कहकर वह तेज़ी से दूकान के बाहर होगया ।

एक अच्छे ग्राहक को खोकर जौहरी दुखी हुआ। वह सभी हारों को उनके डिब्बों में बंद कर रहा था कि एक हार गुम देखकर चीख उठा। उसकी चीख सुनकर दूकान के सामने से जा रहे दो सिपाही दूकान के अन्दर आगये ।

सिपाहियों को देखकर कृष्णचंद्र चुपके से खिसकने को हुआ, पर सिपाहियों ने उसका हाथ पकड़ लिया, फिर कड़ककर पूछा, "बताओ, तुम क्या ख़रीदने आये हो ?"

कृष्णचंद्र के मुँह से बोल न फूटा। दूकानदार ने सिपाहियों को समझाते हुए कहा, "मैं इस युवक को चूड़ियाँ दिखला रहा था कि वह बदमाश चोर क्रोध का स्वाँग भरकर बारह हज़ार मूल्य का हार उठा ले गया ।"

सिपाहियों ने कृष्णचंद्र की तरफ़ शंकित दृष्टि डालकर कहा, "ऐसा मालूम होता है कि यह और वह दोनों चोर-चोर मौसेरे भाई हैं। पहले हमें इसकी जाँच करने दो! क्यों, क्या तुम सोने की चूड़ियाँ ख़रीदने आये थे? तुम्हारे पास कितने रुपये हैं? ख़ाली हाथ तो नहीं आये हो न?" यह कहकर सिपाहियों ने उसके कपड़ों की तलाशी ली ।

कृष्णचंद्र के पास एक पैसा भी न मिला। तब सिपाहियों ने उसकी गरदन पकड़ ली और गरजकर पूछा, "बोलो, तुम्हारे उस चोर साथी का क्या नाम है? वह कहाँ रहता है?"

कृष्णचंद्र ने रोनी सूरत बनाकर उन्हें सारा हाल बता दिया और कहा, "हमने तुलसी मौसी से मन्दिर बनाने की बात मज़ाक में ही कही थी। उसने हमें चूड़ियाँ दे दीं। मैं दूकान में वैसी चूड़ियों का मूल्य जानने के लिए ही आया था कि वह बदमाश चोर दूकान में घुस आया। सच मानिये, यह सब केवल एक संयोग है। मुझे छोड़ दीजिये!"

उधर रामचंद्र ने जब दूकान के भीतर चीख-चिल्लाहट सुनी और दो सिपाहियों को अन्दर जाते देखा तो वह घबरा गया। गोलमाल जान वह बगल की गली से खिसक लिया। जब कृष्णचंद्र सिपाहियों के साथ बाहर आया तो उसके भाई का कही पता न था।

"वाह रे वाह, इतनी छोटी सी उम्र में इतना धोखा कहाँ से सीखा? चलो, सीधे कोतवाली में।" यह कहकर सिपाही कृष्णचंद्र को साथ लेकर चल पड़े।

इस बीच रामचंद्र गली में काफ़ी दूर तक भाग कर मुख्य सड़क पर आ गया। उधर से एक किराये की गाड़ी जाती देखकर रामचंद्र ने उसे रोका। उसमें एक आदमी पहले से बैठा हुआ था।

गाड़ी में बैठे व्यक्ति ने रामचंद्र से पूछा, "अरे भाई, तुम्हें कहाँ जाना है? गाड़ीवान से तुमने यह बात नहीं बतायी?"

रामचंद्र को कुछ न कुछ झूठ तो बोलना ही था। इसलिए उसने मुख्य प्रश्न टालकर कहा, "मेरी बुआ की तबीयत ख़राब है। इलाज करवाना है। मैं ये चूड़ियाँ बेचकर रुपये ले जाने के लिए शहर में आया था।" यह कहकर उसने अपने पास की वे चूड़ियाँ गाड़ी में बैठे व्यक्ति को दिखायीं।

उस आदमी ने चूड़ियाँ हाथ में लेकर उलटी पलटीं, फिर कहा, "तुम मुझे बेवकूफ बनाते हो? इन चूड़ियों को कौन ख़रीदेगा? मैं आँख बन्द करके भी यह बता सकता हूँ कि ये चूड़ियाँ नकली हैं।" यह कहकर उस आदमी ने उन चूड़ियों को पास की गन्दी नाली में फेंक दिया।

रामचंद्र क्षण भर को तो भौंचक्का रह गया। फिर गुस्से में भरकर उबल पड़ा, "मेरी चूड़ियों को गन्दी नाली में फेंकनेवाले तुम कौन होते हो?" यह कहकर रामचंद्र उस पर टूट पड़ा।

उन दोनों की धक्का-मुक्की में गाड़ीवान की पकड़ छूट गयी और वह नीचे जा गिरा। गाड़ी भी फिसलकर बगल की नहर में गिर गयी। इस बीच रामचंद्र और वह आदमी गाड़ी से कूदकर बाहर आगये थे।

जब यह सब चल रहा था तब कृष्णचंद्र को कोतवाली ले जारहे सिपाही भी उधर से गुज़रे।

कृष्णचंद्र ने सिपाहियों को उस आदमी को दिखाया, जो रामचंद्र से लड़ रहा था और कहा, "देखो, यही है वह आदमी, जिसने जौहरी की दूकान से हार चुराया है। और वह दूसरा आदमी मेरा भाई रामचंद्र है।"

सिपाहियों ने रामचंद्र से लड़ाई कर रहे आदमी की तलाशी ली। चोरी गया हार उन्हें मिल गया।

"तो इसका मतलब है कि ये तीनों ही मौसेरे भाई हैं। इन्होंने मिलकर इस हार को चुराया है और अब चोरी के माल के बँटवारे पर झगड़ा कर रहे हैं। चलो, सबको कोतवाली चलना होगा।" यह कहकर सिपाही तीनों को कोतवाली में ले गये।

वहाँ रामचंद्र और कृष्णचंद्र ने दारोगा को आदि से लेकर अन्त तक सारा वृत्तान्त कह सुनाया। दारोगा ने सच्चाई का पता लगाने के लिए इन दोनों के माता-पिता और तुलसी को बुला भेजा। अन्त में, यह साफ़ होगया कि वे दोनों भाई निर्दोष हैं।

इस सारे झमेले का कारण तुलसी थी। उसने दोनों भाइयों को समझाकर कहा, "अरे शैतान बेटो, तुम दोनों ने मुझसे मन्दिर बनाने का मज़ाक किया तो मैंने भी मज़ाक में सोने का मुलम्मा चढ़ी पीतल की चूड़ियाँ दे दीं। हमारे गाँव में तो पहले से ही कई मन्दिर हैं, अब और मन्दिर बनाने की क्या ज़रूरत है? हाँ, वहाँ पाठशाला कोई नहीं है। अगर तुम सच्चे दिल से एक पाठशाला खोलने और बच्चों को अच्छी शिक्षा देने की बात कहो, तो मैं सचमुच तुम्हें खरे सोने की चूड़ियाँ दूँगी। तुम दोनों तो पढ़े-लिखे हो, हमारे गाँव केलिए यह उपकार क्यों नहीं करते?"

इस सारी घटना से रामचंद्र और कृष्णचंद्र ने समझा कि पढ़-लिखकर आवारागर्दी करना कितनी बुरी बात है।

शीघ्र ही दोनों भाईयों ने पीपल के पेड़ के नीचेवाली ज़मीन पर एक पाठशाला आरंभ की। तुलसी ने अपनी सोने की चूड़ियों से पैसा जुटाया। रामचंद्र और कृष्णचंद्र शिक्षक नियुक्त हुए। बच्चों को गाँव में ही अच्छी शिक्षा मिलने लगी।

# बुरा-भला

विशाल देश के राजा का नाम कीर्तिसेन था। उनकी इकलौती बेटी प्रियंवदा अनुपम सुन्दरी थी। एक राजकुमारी को जिन विद्याओं का ज्ञान होना चाहिए, प्रियंवदा ने उन्हें योग्य विद्वानों के निरीक्षण में बड़ी द्रुत गति से सीख लिया था। पर राजकुमारी की जन्म-कुंडली किंचित् दोषपूर्ण थी। राजज्योतिषियों ने राजा और रानी को राजकुमारी के बारे में कुछ आश्चर्य-जनक बातें बतायी थीं। उन्होंने बताया था कि प्रियंवदा एक सामान्य व्यक्ति के साथ विवाह करेगी तथा उसे जीवन में सर्प का भय है।

राजा कीर्तिसेन और उनकी रानी शुभलक्ष्मी को राजज्योतिषियों की विद्या पर और उनकी गणना पर पूरा विश्वास था। वे जानते थे कि इन पंडितों का कथन मिथ्या नहीं हो सकता। फिर भी उन दोनों ने वात्सल्यवश अपनी बेटी को इन दोनों खतरों से बचाने के लिए कुछ आवश्यक प्रबन्ध किये। उनकी व्यवस्था थी कि राजकुमारी प्रियंवदा को आचार्यों के अलावा अन्य किसी युवक से मिलने का अवसर प्राप्त न हो तथा वह सदा दासियों एवं सखियों से घिरी रहे।

प्रियंवदा का पालन-पोषण इसी व्यवस्था से हुआ। अब वह सोलह वर्ष की पूर्ण युवती थी। प्रियंवदा रूप-गुण में असाधारण तो थी ही, साथ ही विनम्र भी थी। राजा कीर्तिसेन ने अपनी लाड़ली बेटी के लिए योग्य वर का अन्वेषण आरंभ कर दिया। वे चाहते थे कि समस्त विद्याओं में कुशल, स्वरूपवान, असाधारण प्रतिभाशाली राजकुमार को वे अपना जामाता बना सकें।

पूर्णिमा की एक रात को प्रियंवदा एकान्त की इच्छा से उद्यान में अकेली टहल रही थी। चारों तरफ़ चांदनी छिटकी हुई थी और रस एवं गन्ध का साम्राज्य था। तभी एक काला नाग वहाँ

प्रकटा और फन फैलाकर राजकुमारी के पास ही नृत्य करने लगा। राजकुमारी स्वयं में इतनी खोयी हुई थी कि उसकी दृष्टि सर्प पर नहीं पड़ी। वह चमेली पुष्पों की गंध में डूबी हुई थी। कुछ क्षण बाद उसने चमेली के एक पुष्प को सूँघा और अनजाने ही नाग की तरफ़ फेंक दिया।

राजकुमारी प्रियंवदा का फेंका हुआ फूल फन फैलाकर नाच रहे नाग को जा लगा। नाग बड़ी ज़ोर से फूत्कार कर उठा। साँप के फुंकारने की ध्वनि सुनकर प्रियंवदा चौंक उठी और इधर-उधर नज़र दौड़ाने लगी। उसने देखा, पास ही एक काला नाग फन फैलाये बैठा है।

नाग को देखकर प्रियंवदा भय से काँप उठी। यह एक इतनी आकस्मिक घटना थी कि राजकुमारी जड़वत् होगयी। नाग तीक्ष्ण दृष्टि से राजकुमारी को ताक रहा था। अचानक ही वह सरटि के साथ राजकुमारी की ओर बढ़ा। राजकुमारी ने भागने की कोशिश की, पर पैरों को किसी चीज़ ने जकड़ लिया। वह डरकर ज़ोर से चीख उठी।

दूसरे ही क्षण राजोद्यान का एक सेवक दौड़ता हुआ उधर आया और उसने नाग को पूँछ से पकड़कर बड़ी ज़ोर से घुमाया। इसके बाद उसने उसे पूरी ताक़त से ज़मीन पर दे मारा और दूर फेंक दिया।

प्रियंवदा होश में आयी और उसने सेवक की तरफ़ दृष्टि डाली। वह एक नौजवान युवक था। अत्यन्त सुन्दर और बलिष्ठ। राजकुमारी ने आज तक ऐसे स्वरूपवान युवक को नहीं देखा था। वह यह भी नहीं जान सकी कि उसकी इस एकान्त-क्षेत्र में वह युवक कैसे आ पहुँचा? कैसे उसने उसकी चीत्कार सुनी ? वह काफ़ी देर तक विचारमग्न खड़ी रही। उसका मन असमंजस से भरा था।

प्रियंवदा ने सेवक से पूछा, "तुम कौन हो ?"

"राजकुमारी, मैं आपका सेवक हूँ। इस राजोद्यान का प्रहरी हूँ।" युवक ने उत्तर दिया।

राजकुमारी ने इस राजप्रहरी को पहले कभी नहीं देखा था, पर इस प्रहरी ने दूर से राजकुमारी को कई बार देखा था।

राजकुमारी ने पूछा, "तुम्हारा नाम ?"

"विजय!" सेवक ने उत्तर दिया।

विजय, तुमने समय पर पहुँच कर मेरे प्राणों की रक्षा की। बताओ, तुम क्या चाहते हो?" प्रियंवदा ने पूछा।

"राजकुमारी, मेरी कोई इच्छा नहीं है।" विजय ने कहा।

"इस संसार में कामना-रहित कोई व्यक्ति नहीं है। तुम संकोच न करो और तुम्हारे मन में जो भी कामना हो, उसे मुझे निर्भय बतादो।" राजकुमारी ने आग्रह दिखाया।

"मनुष्य के मन में स्वर्ग की, भगवान के दर्शन की इच्छा होती है। क्या कोई इन इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है?" विजय ने पूछा।

"क्या तुम्हारी ऐसी कोई इच्छा नहीं, जिसे मैं पूरा कर सकूँ?" प्रियंवदा ने कहा।

"आप अवश्य ही मेरी इच्छा की पूर्ति कर सकती हैं, पर करेंगी नहीं। यदि आप मेरी इच्छा को पूर्ण करना भी चाहें, तो भी मैं उसे पूर्ण नहीं होने दूँगा।" प्रहरी युवक ने कहा।

"बताओ, तुम्हारी क्या इच्छा है?" प्रियंयवदा ने कुछ विस्मित होकर पूछा।

"राजकुमारी, मैं आपसे प्यार करता हूँ। किन्तु हमारा विवाह असंभव है। यदि महाराज को यह बात मालूम हो जाये कि मैं आपसे प्यार करता हूँ तो वे मेरी गरदन उड़वा देंगे। राजकुमारी, मैं सचमुच ही आपसे प्रेम करता हूँ, पर मैं अपने जीवन से भी प्रेम करता हूँ। अगर मैं जिन्दा रहा तो आपको प्रतिदिन देख तो सकता हूँ। मैं अपने इतने ही सौभाग्य से संतुष्ट हूँ और चाहता हूँ कि कोई मुझे आपके दर्शनों से वंचित न करे।" विजय ने कोमल स्वर में कहा।

इस सुदर्शन युवक की इच्छा सुनकर राजकुमारी चकित रह गयी। वह सोचने लगी कि राज सेवक ने उसे सच बात बतायी है। इस युवक के साथ विवाह करना कोई असंभव बात नहीं है, पर वह ऐसा कर नहीं सकेगी। इस बात का पता लगने पर उसके पिता न केवल क्रोधित होंगे, बल्कि सचमुच ही इस युवक की जान भी सांसत में डाल देंगे। ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए? इस युवक ने सर्प से उसके प्राणों की रक्षा की है। अगर वह इस प्राणाक्षक युवक की कामना को पूरा नहीं कर पाती है तो उसका राजकुमारी होना व्यर्थ है।

प्रियंवदा गहरे सोच में पड़ गयी, फिर कुछ खिन्न स्वर में बोली, "विजय, आज तक मैं अपने को बहुत बड़ा मानती थी। पर मैं समझ गयी कि मैं अपने उपकारक का प्रति उपकार तक करने में असमर्थ एक असहाय नारी हूँ। आशा है तुम मुझे क्षमा कर दोगे।"

"राजकुमारी, क्षमा करने के लिए मैंने आपका कोई उपकार भी किया हो, तब न क्षमा करूँ! मैं तो आपका सेवक हूँ। आपकी रक्षा में उपस्थित रहना मेरा कर्त्तव्य है। यदि मेरे प्रति आपका थोड़ा भी स्नेह बनता हो तो वही मेरे लिए सब कुछ है।" विजय बोला।

इसके बाद प्रियंवदा विचार-निमग्न हो उद्यान से अंतापुर को लौट गयी। उस समय उसके पिता राजा कीर्तिसेन महारानी शुभलक्ष्मी से बातचीत कर रहे थे। उन दोनों ने प्रियंवदा का आगमन न जाना। प्रियंवदा भाँप गयी कि बातचीत उसके बारे में ही हो रही है। वह कुतूहलवश पास के एक पर्दे की ओट में चली गयी।

"रानी, प्रियंयवदा के विवाह को लेकर मैं बड़ा चिंतित हूँ।" राजा ने कहा।

"महाराज, मेरी भी समझ में नहीं आ रहा कि हमें क्या करना चाहिए! प्रियंवदा की जन्मकुंडली के अनुसार उसका विवाह किसी राजकुमार से नहीं हो सकेगा। वह एक साधारण व्यक्ति को वरेगी। हमारे राज-ज्योतिषियों की वाणी आज तक झूठी साबित नहीं हुई।" रानी शुभलक्ष्मी ने कहा।

अपने माता-पिता की बातचीत सुनने के बाद प्रियंवदा को एक बात अच्छी तरह समझ में आगयी कि उसकी जन्मकुंडली में एक साधारण व्यक्ति के साथ उसके विवाह का नियोग है। उसने यह भी जान लिया कि उच्च राजवंश में जन्म लेने के कारण उसके माता-पिता कभी भी ऐसे विवाह को स्वीकार नहीं कर पायेंगे।

अब प्रियंवदा वयस्का थी। उद्यान में एक साधारण युवक ने उसके प्राणों की रक्षा की थी और उसके प्रति अपने प्रेम को, विवाह करने की असंभव इच्छा को व्यक्त किया था। इसका अर्थ है कि जो कुछ भी हुआ, उसमें उसके भाग्य-विधान का हाथ है।

प्रियंवदा दिन भर इस प्रश्न पर विचार करती

रही कि अगर उसकी जन्मकुंडली इस बात का निर्देश करती है कि उसका विवाह साधारण व्यक्ति से होगा और अगर यह बात सच प्रमाणित होने वाली हो तो उसके उपकारी, प्राण-रक्षक, सुन्दर, बलिष्ठ विजय के साथ उसके विवाह में क्या दोष है?

गहराई के साथ विचार करने पर प्रियंवदा ने महसूस किया कि राजप्रहरी विजय के साथ ही उसे विवाह करना चाहिए । पर यह बात माता-पिता को कैसे बतायी जाये?

प्रियंवदा इस प्रकार विचार कर ही रही थी कि उसी समय प्रधान राजज्योतिषी शान्तिस्वरूप राजभवन में आये । राजा कीर्तिसेन और रानी शुभलक्ष्मी के साथ उनकी गुप्त मंत्रणा आरंभ हुई । प्रियंवदा ने गुप्त रूप से उनकी बातचीत सुनी । जो निर्णय लिया गया, उसे सुनकर प्रियंवदा काँप उठी ।

उन तीनों की योजना इस प्रकार थीः कहीं से एक साधारण युवक को लाया जाये । उसके साथ गुप्त रूप से राजकुमारी का विवाह हो, फिर विष के प्रयोग से उस युवक को मार डाला जाये । इस प्रकार जन्मकुंडली की बात के पूरा होने के बाद राजकुमारी का विवाह किसी राजकुमार से किया जा सकता है ।

प्रियंवदा को स्पष्ट होगया कि अब अगर वह राजोद्यान के प्रहरी विज्य् से विवाह करने की इचछा प्रकट करती है तो उसके माता-पिता सहर्ष स्वीकार कर लेंगे । पर यह भी सत्य है कि विवाह के बाद उसके पति को मार डाला जायेगा । इससे बढ़कर महापाप और क्या हो सकता है?

प्रियंवदा ने मन ही मन कुछ निर्णय लिया और शाम के समय अकेली ही उद्यान में गयी । उसने राजप्रहरी हो बुलाकर कहा, "विजय, हम दोनों विवाह-सूत्र में बंधेंगे, यह मेरा निर्णय है ।"

"राजकुमारी, मैं ऐसा साहस नहीं कर सकता । मुझे अपने प्राण जाने का डर है ।" विजय ने उत्तर दिया ।

"विजय, मैं तुन्हें एक ऐसा उपाय बताऊँगी कि हमें कोई ख़तरा न होगा । तुम निश्चिंत रहो ।" प्रियंवदा ने कहा । (क्रमशः)

# ज्योतिषी का चुनाव

पुष्पपुर राज्य में एक बार राज-ज्योतिषी का पद रिक्त हुआ। राजा कर्णसिंह की इच्छा थी कि यह पद अत्यन्त विद्वान ज्योतिषी को ही दिया जाये। इस पद की नियुक्ति के लिए देश के सभी कम-अधिक प्रसिद्धिप्राप्त ज्योतिषियों को निमंत्रित किया गया। उनकी परीक्षाएँ ली गयीं, अंत में पाँच पंडित ज्योतिषियों को छाँट लिया गया।

अब इन पाँच में से चुनाव करना था। राजा ने उन पाँचों को अलग-अलग बुलाकर उनसे यही एक प्रश्न किया, "बताइये, क्या आपकी जन्म-कुंडली में आपके राज ज्योतिषी बनने का योग है ?"

पाँचों पंडितों ने एक ही उत्तर दिया, "ऐसा योग होने के कारण ही, महाराज! हम यहाँ आये हैं।"

राजा कर्णसिंह बड़े असमंजस में पड़ गये। इन पाँचों पंडितों में से किसी एक को ही राजज्योतिषी पद पर नियुक्त करना था। इस स्थिति में शेष चार ज्योतिषियों का योग-फल मिथ्या प्रमाणित हो जायेगा। इसका अर्थ है कि वे ज्योतिष-विद्या में पारंगत नहीं हैं। फिर इनमें से श्रेष्ठ ज्योतिषी कौन है?

मंत्री ने राजा का संशय जानकर उनसे कहा, "महाराज, आप इनमें से किसी एक को राज-ज्योतिषी नियुक्त कीजिये। इसके बाद मैं आपके संशय का समाधान प्रस्तुत करूँगा।"

राजा कर्णसिंह ने पंडित रामशास्त्री को राज-ज्योतिषि का पद दे दिया और इसकी सूचना मंत्री को भी दे दी।

मंत्री ने उपस्थित होकर कहा, "महाराज, इन पाँचों में से रामशास्त्री ही ज्योतिषशास्त्र में विशेष रूप से विचक्षण हैं।"

"इसका प्रमाण क्या है?" राजा ने पूछा।

"इसलिए, महाराज! क्योंकि राज ज्योतिषी होने के जिस योग की बात पाँचों ज्योतिषियों ने कही थी, उस योग की सत्यता केवल रामशास्त्री के प्रसंग में ही पूर्ण उतरी है। रामशास्त्री का कथन ही सत्य प्रमाणित हुआ है।" मंत्री ने मन्द स्मित से उत्तर दिया।

## वज़न से तिगुना आहार

जन्मधारण के एक माह पश्चात् किवी के बच्चे का वज़न लगभग ३४० ग्राम होता है। वह चौबीस घंटे के भीतर क़रीब ८०० कीड़ों को खा जाता है। इसका अर्थ है कि वह अपने शरीर के वज़न से तीन गुना अधिक वज़न वाले कीड़ों को पकड़कर खा जाता है।

## गहरी नदी

चीन देश की यांगट्से नदी विश्व की सभी नदियों में अधिक गहरी है। संकरीले पहाड़ी मार्गों से होकर बहनेवाली इस नदी की गहराई ६०० फुट है।

## राक्षस मक्खियाँ

२२ इंच लंबे पंखवाली राक्षस मक्खियाँ तीन हज़ार लाख वर्ष पूर्व नम ज़मीन के ऊपरी तल पर उड़ा करती थीं लगभग ढाई हज़ार लाख वर्ष पूर्व जब पक्षियों ने सर्वप्रथम जन्म लिया, उससे पहले ये मक्खियाँ विद्यमान थीं।

# चेक
से चमके सारे कपड़े

# फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५० )

**पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अप्रैल १९८७ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।**

P. G. Viswanathan

P. G. Viswanathan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ फरवरी १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

---

## दिसम्बर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो: **पढ़ लूं एक कहानी!**

द्वितीय फोटो: **पहले भर लूं पानी!!**

प्रेषक: **मनीशकुमार**, सी-५, भगीरथ कॉलनी, चोमू हाऊस, जयपुर-३०२००१


# चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा: रु. ३०-००

चन्दा भेजने का पता:

**डॉल्टन एजेन्सीस,** चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये:

**चन्दामामा पब्लिकेशन्स,** चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

# एक नया ज़बर्दस्त सनसनाहट! सवेरे सवेरे...
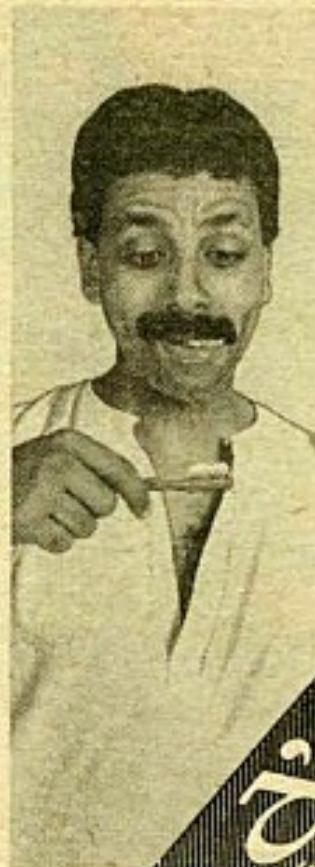
पेपरमिंट और पुदीने की ये सनसनाहट तेज़ी से विकसित हो रहे एक ऐसे फार्मूले में है, जो आपके दाँतों को चहकती सफेदी और साँसों को सचमुच ताज़गी देता है.

नया पॉण्ड्स टूथपेस्ट. ये ब्रश करने में एक नयी उमंग जगाए, उसे मज़ेदार बनाए. आपके बच्चे तो इससे और भी बढ़िया तरह से ब्रश करेंगे. नये पॉण्ड्स टूथपेस्ट का एक ट्यूब आज ही ख़रीदिए. और अपनी हर सुबह एक सुहानी सनसनाहट से भर लीजिए.

विशेष तत्व झाग तेज़ी से फैलता है ।'सनसनाहट' झाग दांत पर जमी...
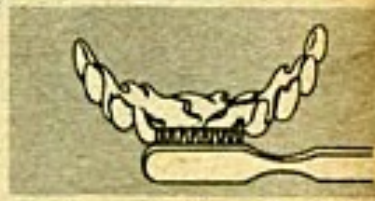
...मैल और अन्नकणों को अधिक आसानी से हटाता है । दाँतों को चमकीले, स्वच्छ बनाता है ।

स्वस्थ दांत और ताज़ी सांसों का सवेरा

**A BRIGHT NEW TRADITION IS BUILT by THE READERS OF**

# THE HERITAGE

**FEATURES AND FICTION FOR TODAY AND TOMORROW**

The span of one and half years is not a long time, yet given will and goodwill, enough of a time to build a healthy, meaningful and intelligent reading tradition.

SLOWLY BUT STEADILY THE ELITE OF INDIA AND MANY LOVERS OF INDIAN CULTURE ABROAD ARE UNITING IN THE HERITAGE.

* THE HERITAGE reveals the fourth dimension of life to you—through series like *"The Other Experience"* and *"Fables and Fantasies for Adults"*.
* THE HERITAGE brings to you the best of creative literature of Contemporary India—stories, novels and poems.
* THE HERITAGE features pictorial articles on places and monuments delving into their *roots*.
* THE HERITAGE takes you to a tour of the *Little-Known India*.